Algernon Blackwood

THE WENDIGO

1910

Table of Contents

□□□□□□□□
□□□□□□□□□ □□□□□□□□□
□□□□
□□□□□□□□
□□□□□□
□□□□□□□
□□
□□□□
□□□□□□□
□□□□□□
□□□□□□

वेंडिगो

एल्गरनॉन ब्लैकवुड

1910

Journal Press

मैं

उस साल कई शिकारियों के दल निकले, लेकिन उन्हें एक भी ताज़ा निशान नहीं मिला; क्योंकि मूस बहुत शर्मीले थे, और सभी शिकारी अपने-अपने परिवारों के पास अपनी कल्पनाओं के आधार पर सबसे अच्छे बहाने बनाकर लौट आए। डॉ. कैथकार्ट, और भी कई लोग, बिना किसी ट्रॉफी के वापस लौटे; लेकिन वे अपने साथ एक ऐसे अनुभव की याद लेकर आए, जिसे वे अब तक मारे गए सभी नर मूसों से कहीं अधिक मूल्यवान मानते हैं। लेकिन एबरडीन के कैथकार्ट को मूसों के अलावा अन्य चीजों में भी रुचि थी—जिनमें मानव मन की विचित्रताएँ भी शामिल थीं। हालाँकि, इस विशेष कहानी का उल्लेख उनकी सामूहिक मतिभ्रम पर लिखी पुस्तक में नहीं है, इसका सीधा सा कारण यह है (जैसा कि उन्होंने एक बार अपने एक सहकर्मी से कहा था) कि वे स्वयं इस घटना में इतने गहरे रूप से शामिल थे कि वे इस पूरे मामले का सही आकलन नहीं कर सकते थे...
अपने और अपने मार्गदर्शक हैंक डेविस के अलावा, वहाँ युवा सिम्पसन, उनका भतीजा, जो धर्मशास्त्र का छात्र था और "वी किर्क" (जो उस समय कनाडा के जंगलों की अपनी पहली यात्रा पर था) में जाने वाला था, और सिम्पसन का मार्गदर्शक डेफैगो भी था। जोसेफ डेफैगो एक फ्रांसीसी "कनाडाई" था, जो वर्षों पहले अपने मूल प्रांत क्यूबेक से भटक गया था और रैट पोर्टेज में तब फंस गया था जब कैनेडियन पैसिफिक रेलवे का निर्माण हो रहा था; वह लकड़ी के काम और जंगल के ज्ञान के अद्वितीय ज्ञान के साथ-साथ पुराने घुमक्कड़ गीत भी गा सकता था और शिकार की बेहतरीन कहानियाँ सुना सकता था। इसके अलावा, वह उस अनोखे जादू से बहुत प्रभावित था जो जंगल कुछ एकाकी लोगों पर डालता है, और वह जंगली एकांतों से एक

ऐसे रोमांटिक जुनून से प्यार करता था जो लगभग एक सनक की हद तक था। जंगल का जीवन उसे मोहित करता था - निस्संदेह, यही कारण था कि वह उनके रहस्यों को सुलझाने में असाधारण रूप से कुशल था।
इस विशेष अभियान के लिए हैंक ने उसे चुना था। हैंक उसे जानता था और उस पर पूरा भरोसा करता था। वह उसे गालियाँ भी देता था, "मज़ाक में जैसे कोई दोस्त देता है," और चूंकि उसके पास रंगीन, भले ही पूरी तरह से अर्थहीन, गालियों का भंडार था, इसलिए इन दोनों मजबूत और साहसी लकड़हारों के बीच बातचीत अक्सर काफी जीवंत होती थी। हालांकि, हैंक ने अपने पुराने "शिकार बॉस" डॉ. कैथकार्ट के सम्मान में गालियों की इस धारा को थोड़ा कम करने पर सहमति जताई, जिन्हें वह देहाती रिवाज के अनुसार "डॉक्टर" कहकर संबोधित करता था, और इसलिए भी क्योंकि वह समझता था कि युवा सिम्पसन पहले से ही "थोड़ा पादरी" बन चुका था। हालांकि, डेफैगो पर उसकी एक ही आपत्ति थी—और वह यह थी कि फ्रांसीसी कनाडाई कभी-कभी वह प्रदर्शित करता था जिसे हैंक "एक शापित और निराशाजनक दिमाग" के रूप में वर्णित करता था, जिसका स्पष्ट अर्थ यह था कि वह कभी-कभी अपने स्वभाव के अनुरूप, लैटिन स्वभाव का, होता था और जब कुछ भी उसे बोलने के लिए प्रेरित नहीं कर पाता था तो वह एक प्रकार की मौन उदासी के दौर से गुजरता था। दूसरे शब्दों में कहें तो, डेफैगो कल्पनाशील और उदास स्वभाव का था। और आमतौर पर, "सभ्यता" में बहुत लंबे समय तक रहने से ही उसे दौरे पड़ते थे, क्योंकि कुछ दिनों तक जंगल में रहने से वह हमेशा ठीक हो जाता था।
तो ये थे चार लोगों का वो दल जो अक्टूबर के आखिरी हफ्ते में, उस "शर्मीले मूस वाले साल" में, रैट पोर्टेज के उत्तर में सुदूर जंगल में डेरा डाले हुए थे—एक सुनसान और वीरान इलाका। उनमें पंक नाम का एक भारतीय भी था, जो पिछले सालों में डॉ. कैथकार्ट और

हैंक के साथ शिकार यात्राओं पर गया करता था और रसोइया का काम करता था। उसका काम बस इतना था कि वह शिविर में रहे, मछली पकड़े और कुछ ही मिनटों में हिरण के मांस के टुकड़े और कॉफी तैयार करे। उसने अपने पुराने संरक्षकों द्वारा विरासत में मिले पुराने कपड़े पहने हुए थे, और अपने मोटे काले बालों और सांवली त्वचा को छोड़कर, इन शहरी कपड़ों में वो असली रेडस्किन जैसा बिल्कुल नहीं दिखता था, जैसे कोई स्टेज नीग्रो असली अफ्रीकी जैसा नहीं दिखता। फिर भी, पंक में अपनी लुप्त होती जाति की सहज प्रवृत्ति अभी भी बाकी थी; उसकी खामोशी और सहनशीलता बनी हुई थी; साथ ही उसका अंधविश्वास भी।
उस रात धधकती आग के चारों ओर बैठे लोग हताश थे, क्योंकि एक सप्ताह बीत चुका था और हाल ही में किसी मूस के दिखने का कोई आभास नहीं था। डेफैगो ने अपना गीत गाया और कहानी सुनाने लगा, लेकिन हैंक, चिड़चिड़े मूड में, उसे बार-बार याद दिलाता रहा कि "वह चेहरे को इतना बिगाड़ रहा है कि यह लगभग सब कुछ एक घिसा-पिटा झूठ है," जिससे फ्रांसीसी अंततः एक उदास चुप्पी में डूब गया जिसे तोड़ना असंभव लग रहा था। डॉ. कैथकार्ट और उनका भतीजा एक थका देने वाले दिन के बाद काफी थक चुके थे। पंक बर्तन धो रहा था और शाखाओं के बने एक तिजोरी के नीचे खुद से बड़बड़ा रहा था, जहाँ वह बाद में सो भी गया। किसी ने भी धीरे-धीरे बुझती आग को हिलाने की जहमत नहीं उठाई। ऊपर आसमान में तारे चमक रहे थे, आसमान बिल्कुल बर्फीला था, और हवा इतनी कम थी कि उनके पीछे शांत झील के किनारों पर चुपके से बर्फ जमने लगी थी। विशाल, शांत जंगल की खामोशी धीरे- धीरे आगे बढ़ी और उन्हें घेर लिया।
हैंक ने अचानक अपनी नाक से निकलने वाली आवाज में बात काट दी।

"मैं कल कुछ नया शुरू करने के पक्ष में हूँ, डॉक्टर," उसने अपने मालिक की ओर देखते हुए जोश से कहा। "यहाँ हमारा कोई अस्तित्व नहीं है।"
"सहमत हूँ," कैथकार्ट ने कहा, जो हमेशा कम बोलने वाले व्यक्ति थे। "मुझे यह विचार अच्छा लगता है।"
"हाँ पिताजी, बढ़िया है," हैंक ने आत्मविश्वास से कहा। "मान लो, अब हम दोनों पश्चिम की ओर चलें, गार्डन लेक की तरफ! हममें से किसी ने भी उस शांत जगह को अभी तक छुआ नहीं है—"
"मैं तुम्हारे साथ हूं।"
और तुम, डेफैगो, मिस्टर सिम्पसन को छोटी डोंगी में साथ ले जाओ, झील पार करो, फिफ्टी आइलैंड वाटर में जाओ, और उस दक्षिणी किनारे पर एक नज़र डालो। पिछले साल मूस वहाँ बुरी तरह जमा हो गए थे, और हमें क्या पता, वे इस साल भी हमें चिढ़ाने के लिए ऐसा ही कर रहे हों।
डेफैगो आग पर नजर गड़ाए हुए था और उसने कोई जवाब नहीं दिया। संभवतः वह अपनी अधूरी कहानी से अब भी नाराज था।
"इस साल उस तरफ कोई नहीं गया है, और मैं इस बात पर पूरी तरह यकीन करता हूँ!" हैंक ने ज़ोर देकर कहा, मानो उसे यह बात पक्के तौर पर पता हो। उसने अपने साथी की तरफ तीखी नज़र से देखा। "बेहतर होगा कि तुम छोटा सा रेशमी तंबू लेकर दो रातें यहीं रुक जाओ," उसने यह कहते हुए बात खत्म की, मानो मामला पूरी तरह सुलझ गया हो। क्योंकि हैंक को शिकार का मुख्य आयोजक और दल का मुखिया माना जाता था।
यह बात किसी के लिए भी स्पष्ट थी कि डेफैगो इस योजना से सहमत नहीं था, लेकिन उसकी चुप्पी सामान्य असहमति से कहीं अधिक कुछ व्यक्त करती प्रतीत हुई, और उसके संवेदनशील काले चेहरे पर आग की

रोशनी की चमक की तरह एक विचित्र भाव कौंध गया - हालांकि इतनी जल्दी नहीं कि तीनों पुरुषों को इसे पकड़ने का समय न मिले। "मुझे लगा कि वो किसी वजह से घबरा गया था," सिम्पसन ने बाद में अपने चाचा के साथ साझा किए गए तंबू में कहा। डॉ. कैथकार्ट ने तुरंत कोई जवाब नहीं दिया, हालांकि उस समय उस भाव ने उन्हें इतना उत्सुक कर दिया था कि उन्होंने उसे मन में याद रख लिया था। उस भाव ने उन्हें क्षण भर के लिए बेचैन कर दिया था, जिसका कारण वे उस समय ठीक से समझ नहीं पा रहे थे।
लेकिन हांक ने ही सबसे पहले इस बात पर ध्यान दिया था, और अजीब बात यह थी कि दूसरे की अनिच्छा पर भड़कने या गुस्सा होने के बजाय, उसने तुरंत उसे थोड़ा हंसाना शुरू कर दिया।
"लेकिन इस साल वहां कोई न जाने का कोई खास कारण नहीं है," उन्होंने दबी हुई आवाज़ में कहा; "कम से कम उस कारण की बात नहीं कर रहे हो! पिछले साल आग लगने की वजह से लोग नहीं जा पाए थे, और इस साल शायद—शायद ऐसा ही हो गया, बस!" उनका अंदाज़ स्पष्ट रूप से उत्साहवर्धक था।
जोसेफ डेफैगो ने एक पल के लिए अपनी नज़रें उठाईं, फिर उन्हें नीचे कर लिया। जंगल से हवा का एक झोंका आया और अंगारों को हिलाकर एक तेज़ लपट में बदल दिया। डॉ. कैथकार्ट ने एक बार फिर गाइड के चेहरे के भाव को देखा, और एक बार फिर उन्हें वह भाव पसंद नहीं आया। लेकिन इस बार उस भाव का असली मतलब साफ था। उन आँखों में, एक पल के लिए, उन्हें एक ऐसे व्यक्ति की झलक दिखाई दी जो अंदर तक डरा हुआ था। यह बात उन्हें जितना वे स्वीकार करना चाहते थे, उससे कहीं ज़्यादा बेचैन कर गई।
"क्या उस तरफ़ कुछ बुरे भारतीय हैं?" उसने थोड़ी हंसी के साथ पूछा, ताकि माहौल थोड़ा हल्का हो जाए। वहीं सिम्पसन, जो नींद

में इतना डूबा हुआ था कि इस हल्की-फुल्की बातचीत पर ध्यान ही नहीं दे पाया, एक बड़ी जम्हाई लेते हुए बिस्तर की ओर चला गया; "या—या उस देश में कुछ गड़बड़ है?" उसने अपने भतीजे के सुनने की सीमा से बाहर जाते ही पूछा।
हैंक ने अपनी सामान्य स्पष्टवादिता से कुछ कम स्पष्टवादिता के साथ उसकी ओर देखा।
"वो बस डर गया है," उसने हंसते हुए जवाब दिया। "किसी पुरानी मनगढ़ंत कहानी से बुरी तरह डर गया है! बस इतना ही है ना, मेरे दोस्त?" और उसने डेफैगो के उस मोकासिन वाले पैर पर दोस्ताना अंदाज़ में एक लात मार दी जो आग के सबसे करीब था।
डेफैगो ने अचानक ऊपर देखा, मानो किसी अधूरी तल्लीनता से जागा हो, हालांकि उस तल्लीनता ने उसे अपने आसपास हो रही सभी चीजों को देखने से नहीं रोका था।
"बिल्कुल भी नहीं!" उसने चुनौती भरे लहजे में जवाब दिया। "झाड़ियों में ऐसा कुछ भी नहीं है जो जोसेफ डेफैगो को डरा सके, और इसे कभी मत भूलना!" और जिस सहज ऊर्जा के साथ वह बोल रहा था, उससे यह जानना असंभव था कि उसने पूरी सच्चाई बताई या उसका केवल एक अंश।
हैंक डॉक्टर की ओर मुड़ा। वह कुछ कहने ही वाला था कि अचानक रुक गया और पीछे मुड़कर देखा। अंधेरे में उनके ठीक पीछे से आई एक आवाज़ ने तीनों को चौंका दिया। यह बूढ़ा पंक था, जो उनकी बातचीत के दौरान अपनी झोपड़ी से उठकर आग की रोशनी के घेरे से थोड़ा आगे खड़ा होकर सुन रहा था।
“फिर कभी, डॉक्टर!” हैंक ने आँख मारते हुए फुसफुसाया, “जब दर्शक दीर्घा में लोग नीचे न उतरे हों!” और उछलकर खड़ा हो गया, उसने उस भारतीय की पीठ थपथपाई और ज़ोर से चिल्लाया, “आग के पास आओ और

अपनी गंदी लाल चमड़ी को थोड़ा गर्म कर लो।” वह उसे आग की ओर खींच ले गया और उसमें और लकड़ी डाल दी। “एक-दो घंटे पहले तुमने हमें बहुत बढ़िया खाना खिलाया था,” वह जोश से बोला, मानो उस आदमी का ध्यान किसी और बात पर लगाना चाहता हो, “और यह ईसाई धर्म के नियमों के विरुद्ध है कि तुम वहाँ ठंड में ठिठकते रहो जबकि हम सब मज़े से भुन रहे हैं!” पंक अंदर आया और अपने पैर गर्म किए, दूसरे की बातों पर मुस्कुराया, जिसे वह आधा ही समझ पाया, लेकिन कुछ नहीं बोला। और थोड़ी देर बाद, डॉक्टर कैथकार्ट ने देखा कि आगे बातचीत संभव नहीं है, तो वह अपने भतीजे के नक्शे कदम पर चलते हुए तंबू की ओर चले गए, तीनों आदमियों को जलती हुई आग पर सिगरेट पीते हुए छोड़कर।
एक छोटे से तंबू में अपने साथी को जगाए बिना कपड़े उतारना आसान नहीं होता, और कैथकार्ट, जो पचास से अधिक वर्षों के बावजूद कठोर और गर्मजोशी से भरे हुए थे, ने खुले में वह काम किया जिसे हैंक "अपनी जवानी का एक बड़ा हिस्सा" कहता। इस दौरान उन्होंने देखा कि पंक इस बीच अपने झोपड़े में वापस चला गया था, और हैंक और डेफैगो पूरी ताकत से काम में लगे हुए थे, या यूँ कहें कि हथौड़ा और निहाई, जिसमें छोटा फ्रांसीसी कनाडाई निहाई की भूमिका निभा रहा था। यह सब पश्चिमी मेलोड्रामा के पारंपरिक मंच दृश्य जैसा था: आग की रोशनी से उनके चेहरे बारी-बारी से लाल और काले धब्बों से जगमगा रहे थे; डेफैगो, ढीली टोपी और मोकासिन पहने "बंजर भूमि" के खलनायक की भूमिका में; हैंक, खुले चेहरे और बिना टोपी के, अपने कंधों को बेपरवाह तरीके से हिलाते हुए, ईमानदार और धोखे में आए नायक की भूमिका में; और बूढ़ा पंक, पृष्ठभूमि में छिपकर बातें सुन रहा था, रहस्य का माहौल बना रहा था। डॉक्टर ने इन बारीकियों को देखकर मुस्कुराया; लेकिन उसी क्षण उसके भीतर कुछ

गहरा—उसे ठीक से पता नहीं था कि क्या—थोड़ा सिकुड़ गया, मानो चेतावनी की एक लगभग अगोचर साँस उसकी आत्मा की सतह को छूकर गायब हो गई हो, इससे पहले कि वह उसे समझ पाता। शायद इसका कारण डेफैगो की आँखों में देखा गया वह "डरा हुआ भाव" था; "शायद"—क्योंकि क्षणिक भावना का यह संकेत आमतौर पर उसके इतने तीक्ष्ण विश्लेषण से बच निकलता था। उसे अस्पष्ट रूप से आभास था कि डेफैगो किसी न किसी तरह मुसीबत खड़ी कर सकता है... उदाहरण के लिए, वह हैंक जितना स्थिर मार्गदर्शक नहीं था... इससे आगे वह नहीं जा सका...
सिम्पसन जहाँ गहरी नींद में सो रहा था, उस घुटन भरे तंबू में घुसने से पहले उसने कुछ देर और उन आदमियों को देखा। उसने देखा कि हैंक न्यूयॉर्क के किसी अश्वेत शराबखाने में पागल अफ़्रीकी की तरह गालियाँ दे रहा था; लेकिन ये "स्नेह" की गालियाँ थीं। अब जब उनके अवरोध का कारण सो रहा था, तो बेतुकी गालियाँ बेरोक-टोक निकल रही थीं। थोड़ी देर बाद उसने लगभग कोमलता से अपने साथी के कंधे पर हाथ रखा और वे दोनों साथ-साथ उस अंधेरे में चले गए जहाँ उनका तंबू हल्का-हल्का चमक रहा था। पंक भी कुछ देर बाद उनके पीछे-पीछे चला गया और अपनी बदबूदार चादरों के बीच विपरीत दिशा में गायब हो गया।
डॉ. कैथकार्ट भी उसी तरह लेट गए। थकान और नींद उनके मन में एक अस्पष्ट जिज्ञासा से जूझ रही थी कि आखिर किस बात ने डेफैगो को फिफ्टी आइलैंड वाटरवे के उस इलाके से डरा दिया था, और साथ ही वे यह भी सोच रहे थे कि पंक की मौजूदगी ने हैंक की बात पूरी होने से क्यों रोक दी। फिर उन्हें नींद आ गई। उन्हें कल पता चल जाएगा। हैंक उन्हें यह कहानी तब सुनाएगा जब वे उस मायावी मूस का पीछा कर रहे होंगे।

घने जंगल के बीचोंबीच बड़ी बेखौफी से लगाए गए उस छोटे से शिविर में गहरी खामोशी छा गई। तारों की रोशनी में झील काले कांच की तरह चमक रही थी। ठंडी हवा चुभ रही थी। रात के झोंके, जो जंगल की गहराई से अपनी खामोश लहरें बहाते हुए दूर की पहाड़ियों और जमने लगी झीलों से संदेश लेकर आ रहे थे, उनमें आने वाली सर्दी की हल्की, उदास गंध पहले से ही समाई हुई थी। अपनी मंद गंध के कारण गोरे लोग शायद उन्हें कभी पहचान नहीं पाते; लकड़ी की आग की खुशबू उनसे सौ मील दूर काई, छाल और सूखते दलदल की लगभग बिजली जैसी तीक्ष्ण गंध को छिपा देती। यहां तक कि हैंक और डेफैगो भी, जो जंगल की आत्मा से सूक्ष्म रूप से जुड़े हुए थे, शायद अपनी कोमल नाक को व्यर्थ ही फैला पाते...
लेकिन एक घंटे बाद, जब सब मुर्दों जैसी नींद में सो रहे थे, बूढ़ा पंक अपने कंबलों से रेंगता हुआ निकला और एक परछाई की तरह झील के किनारे चला गया—खामोशी से, जैसे केवल भारतीय ही चल सकते हैं। उसने अपना सिर उठाया और चारों ओर देखा। घने अंधेरे में दृष्टि का कोई उपयोग नहीं था, लेकिन जानवरों की तरह, उसके पास अन्य इंद्रियां थीं जिन्हें अंधेरा शांत नहीं कर सकता था। उसने सुना—फिर हवा को सूंघा। हेमलॉक के तने की तरह स्थिर वह वहीं खड़ा रहा। पांच मिनट बाद उसने फिर अपना सिर उठाया और सूंघा, और एक बार फिर। अद्भुत नसों में एक झनझनाहट दौड़ गई, जिसका कोई बाहरी संकेत नहीं था, जैसे ही उसने ताज़ी हवा को महसूस किया। फिर, अपने शरीर को आसपास के अंधेरे में इस तरह विलीन करते हुए, जैसे केवल जंगली आदमी और जानवर ही समझ सकते हैं, वह मुड़ा, अभी भी एक परछाई की तरह चलता हुआ, और चुपके से अपने झोपड़े और बिस्तर पर वापस चला गया।

और उसके सोने के तुरंत बाद, हवा के रुख में आए बदलाव ने, जिसका उसने अनुमान लगाया था, झील में तारों के प्रतिबिंब को धीरे से हिला दिया। फिफ्टी आइलैंड वाटर से परे दूर-दूर तक फैली पहाड़ियों से उठती हुई, वह उसी दिशा से आ रही थी जहाँ उसने देखा था, और बड़े पेड़ों की चोटियों से होकर एक हल्की और धीमी सी गुनगुनाहट के साथ सोए हुए शिविर के ऊपर से गुज़र गई, जो लगभग सुनाई देने के लिए बहुत ही धीमी थी। इसके साथ ही, रात के रेगिस्तानी रास्तों पर, हालांकि बहुत धीमी, इतनी ऊँची कि भारतीय की नाजुक नसों के लिए भी मुश्किल थी, एक अजीब सी, हल्की गंध फैल गई, जो अजीब तरह से बेचैन करने वाली थी, किसी ऐसी चीज़ की गंध जो अपरिचित सी लग रही थी—बिल्कुल अनजान।
फ्रांसीसी कनाडाई और भारतीय मूल के व्यक्ति दोनों ही लगभग इसी समय अपनी नींद में बेचैनी से करवटें बदलने लगे, हालांकि उनमें से कोई भी जागा नहीं। फिर उस अविस्मरणीय विचित्र गंध का भूत सा साया दूर-दूर तक फैले निर्जन जंगल में खो गया।

द्वितीय

सुबह सूरज निकलने से पहले ही शिविर में चहल-पहल मच गई थी। रात में हल्की बर्फबारी हुई थी और हवा में ठंडक थी। पंक ने समय पर अपना काम कर दिया था, क्योंकि कॉफी और तले हुए बेकन की खुशबू हर तंबू तक पहुँच रही थी। सभी का मूड अच्छा था।
"हवा का रुख बदल गया है!" हैंक ने जोश से चिल्लाते हुए कहा, और सिम्पसन और उसके गाइड को छोटी डोंगी में सामान लादते हुए देखा। "यह झील के उस पार है—बिल्कुल आपके लिए। और बर्फ से पक्के रास्ते बन जाएँगे! अगर वहाँ कोई मूस घूम रहा है, तो हवा के इस रुख में उन्हें आपकी आहट तक नहीं मिलेगी। शुभकामनाएँ, मिस्टर डेफैगो!" उसने मज़ाकिया अंदाज़ में इस नाम का फ्रांसीसी उच्चारण करते हुए कहा, "बोन चांस!"
डेफैगो ने शुभकामनाओं का जवाब दिया, जाहिर तौर पर वह बहुत खुश था, उसकी खामोशी गायब हो गई थी। आठ बजे से पहले ही बूढ़े पंक ने शिविर को अपने लिए खाली कर दिया था, कैथकार्ट और हैंक पश्चिम की ओर जाने वाले रास्ते पर काफी आगे निकल चुके थे, जबकि डेफैगो और सिम्पसन को रेशमी तंबू और दो दिन के भोजन के साथ ले जाने वाली डोंगी झील की सतह पर एक छोटे से बिंदु की तरह तैरती हुई पूर्व दिशा की ओर बढ़ रही थी।
सर्दियों की तीक्ष्णता अब सूर्य की चमक से कुछ कम हो गई थी, जो घने जंगलों से ढकी पहाड़ियों के ऊपर से निकलकर नीचे झील और जंगल की दुनिया पर अपनी भरपूर गर्मी बिखेर रहा था; लून पक्षी हवा से उड़ती हुई फुहारों के बीच से उड़ रहे थे; गोताखोर पक्षी अपने भीगे हुए सिर सूर्य की ओर हिलाते और फिर फुर्ती से आंखों से ओझल हो जाते; और जहां तक दृष्टि जाती थी, मीलों तक फैला हुआ अंतहीन,

कोई दूसरा देश देखा था—चीजों की विशालता ने उसे कुछ हद तक चकित कर दिया। उसने महसूस किया कि प्राचीन जंगलों के बारे में सुनना एक बात थी, और उन्हें देखना बिलकुल दूसरी बात। उनमें रहना और उनके वन्य जीवन से परिचित होना एक ऐसा अनुभव था जिसे कोई भी बुद्धिमान व्यक्ति अपने उन व्यक्तिगत मूल्यों में बदलाव किए बिना नहीं कर सकता था जिन्हें वह अब तक स्थायी और पवित्र मानता आया था।
सिम्पसन को इस भावना का पहला हल्का संकेत तब मिला जब उसने नई . 303 राइफल अपने हाथों में ली और उसके बेदाग, चमकते हुए बैरलों को देखा। झील और पोर्टेज के रास्ते मुख्यालय तक की तीन दिन की यात्रा ने इस प्रक्रिया को एक कदम और आगे बढ़ा दिया था। और अब जब वह उस जंगल के किनारे से भी आगे बढ़कर, जहाँ उन्होंने डेरा डाला था, यूरोप जितने विशाल निर्जन क्षेत्रों के निर्जन हृदय में प्रवेश करने वाला था, तो स्थिति की वास्तविक प्रकृति उस पर आनंद और विस्मय के ऐसे प्रभाव के साथ छा गई जिसे उसकी कल्पना पूरी तरह से समझ सकती थी। यह वह और डेफैगो थे, जिनका सामना एक विशाल सेना से था—कम से कम, एक टाइटन से!
इन दूरस्थ और एकांत जंगलों की उजाड़ भव्यता ने उसे अपनी तुच्छता का एहसास कराकर पूरी तरह से अभिभूत कर दिया। घने जंगलों का वह कठोर स्वरूप, जिसे निर्मम और भयानक ही कहा जा सकता है, क्षितिज पर तैरते इन दूर नीले जंगलों से उभरा और स्वयं को प्रकट किया। वह मौन चेतावनी को समझ गया। उसने अपनी पूर्ण असहायता को महसूस किया। केवल डेफैगो, एक दूरस्थ सभ्यता के प्रतीक के रूप में, जहाँ मनुष्य स्वामी था, उसके और थकावट और भुखमरी से होने वाली निर्मम मृत्यु के बीच खड़ा था।

इसलिए, डेफैगो को डोंगी को किनारे पर पलटते, चप्पूओं को सावधानीपूर्वक नीचे समेटते और फिर लगभग अदृश्य निशान के दोनों ओर कुछ दूरी तक देवदार के तनों पर निशान बनाते हुए देखना उसके लिए रोमांचकारी था, साथ ही उसने लापरवाही से यह टिप्पणी भी की, "सुनो, सिम्पसन, अगर मुझे कुछ हो जाता है, तो तुम्हें डोंगी इन निशानों से बिल्कुल सही मिलेगी;—फिर पश्चिम की ओर सूरज की दिशा में मुड़कर वापस अपने शिविर पर पहुँच जाना, समझे?"
यह कहना दुनिया की सबसे स्वाभाविक बात थी, और उसने इसे बिना किसी स्पष्ट स्वर परिवर्तन के कहा। बस इतना ही कि उस क्षण युवक की भावनाओं को शब्दों में व्यक्त किया गया, जो उस स्थिति और उसमें उसकी अपनी बेबसी का प्रतीक था। वह एक आदिम दुनिया में डेफैगो के साथ अकेला था: बस इतना ही। डोंगी, जो मनुष्य की श्रेष्ठता का एक और प्रतीक थी, अब पीछे छूटने वाली थी। कुल्हाड़ी से पेड़ों पर बने वे छोटे पीले निशान ही उसके छिपने की जगह के एकमात्र संकेत थे।
इसी बीच, अपने-अपने कंधों पर सामान लादे, प्रत्येक व्यक्ति अपनी-अपनी राइफल लिए, वे चट्टानों और गिरे हुए पेड़ों के तनों के ऊपर से और अर्ध-जमे हुए दलदलों को पार करते हुए पतले रास्ते पर आगे बढ़े; जंगल में बिखरे हुए कई झीलों के किनारे से गुज़रते हुए, जिनकी सीमाएँ कोहरे से घिरी हुई थीं; और लगभग पाँच बजे अचानक खुद को जंगल के किनारे पर पाया, जहाँ से उनके सामने पानी का एक विशाल क्षेत्र दिखाई दे रहा था, जो हर आकार और प्रकार के चीड़ के पेड़ों से ढके द्वीपों से भरा हुआ था।
"पचास द्वीप जल," डेफैगो ने थके हुए स्वर में घोषणा की, "और सूरज अपना गंजा बूढ़ा सिर उसमें डुबोने ही वाला है!" उसने अनजाने में

ही काव्यात्मक लहजे में कहा; और तुरंत ही वे रात के लिए डेरा डालने में जुट गए।
कुछ ही मिनटों में, उन कुशल हाथों की बदौलत, जो कभी कोई हरकत न तो बहुत ज़्यादा करते थे और न ही बहुत कम, रेशमी तंबू तख़्ते में कसकर और आराम से खड़ा हो गया, बलसम की टहनियों के बिस्तर तैयार हो गए, और खाना पकाने की आग कम से कम धुएँ के साथ तेज़ गति से जलने लगी। जब युवा स्कॉटिश व्यक्ति डोंगी के पीछे ट्रोलिंग करके पकड़ी गई मछलियों को साफ़ कर रहा था, तब डेफैगो ने अंदाज़ा लगाया कि वह मूस के निशान खोजने के लिए झाड़ियों में एक चक्कर लगाएगा। "हो सकता है कि मुझे कोई ऐसा पेड़ मिल जाए जहाँ उन्होंने सींग रगड़े हों," उसने आगे बढ़ते हुए कहा, "या मेपल के आखिरी पत्तों को खा रहे हों"—और वह चला गया।
शाम के धुंधलके में उसकी छोटी सी आकृति परछाई की तरह गायब हो गई, जबकि सिम्पसन ने एक तरह की प्रशंसा के साथ देखा कि जंगल ने उसे कितनी आसानी से अपने भीतर समा लिया। ऐसा लगा जैसे कुछ ही कदम में वह ओझल हो गया हो।
फिर भी यहाँ आसपास झाड़ियाँ कम थीं; पेड़ कुछ दूरी पर, अच्छी तरह से फैले हुए थे; और खुले मैदानों में स्प्रूस और हेमलॉक के विशाल तनों के बीच चांदी के रंग के बर्च और मेपल के पेड़ भाले की तरह पतले और नुकीले उग रहे थे। इक्का-दुक्का झुके हुए विशालकाय पेड़ों और जमीन से इधर-उधर निकले हुए भूरे रंग के पत्थरों को छोड़कर, यह किसी पुराने देश के पार्क जैसा लग सकता था। लगभग, इसमें मानव का हाथ दिखाई देता था। हालाँकि, थोड़ा दाईं ओर, मीलों तक फैला हुआ विशाल जला हुआ क्षेत्र शुरू होता था, जो अपना असली स्वरूप बयां करता था—जिसे ब्रूले कहा जाता है, जहाँ पिछले साल की आग हफ्तों तक भड़कती रही थी, और अब जले हुए ठूंठ शाखाओं

से रहित, जमीन में गड़े विशाल माचिस की तीलियों की तरह, दुबले- पतले और बदसूरत खड़े थे, जिनका निर्जन और वीरानपन शब्दों में बयान नहीं किया जा सकता था। कोयले और बारिश से भीगी राख की हल्की सी गंध अभी भी वहाँ फैली हुई थी।
शाम तेज़ी से गहरी होती जा रही थी; जंगल में अँधेरा छा गया; आग की चटकने की आवाज़ और पथरीले झील के किनारे छोटी-छोटी लहरों की आवाज़ ही सुनाई दे रही थी। सूरज ढलने के साथ ही हवा भी थम गई थी, और शाखाओं के उस विशाल संसार में सन्नाटा पसरा हुआ था। ऐसा लग रहा था मानो किसी भी क्षण, वन के देवता, जिनकी पूजा मौन और एकांत में की जाती है, पेड़ों के बीच अपनी विशाल और भयानक आकृति फैला देंगे। सामने, विशाल सीधे तनों से बने दरवाजों से होते हुए, फिफ्टी आइलैंड वाटर का विस्तार फैला हुआ था, जो एक अर्धचंद्राकार झील थी, जिसकी लंबाई एक छोर से दूसरे छोर तक लगभग पंद्रह मील थी, और जहाँ उन्होंने डेरा डाला था, वहाँ लगभग पाँच मील चौड़ी थी। गुलाबी और केसरिया रंग का आकाश, जो सिम्पसन ने अब तक देखे किसी भी वातावरण से कहीं अधिक स्वच्छ था, अभी भी लहरों पर अपनी हल्की-हल्की रोशनी बिखेर रहा था, जहाँ द्वीप—निश्चित रूप से पचास नहीं, बल्कि सौ—किसी जादुई बेड़े की परी नौकाओं की तरह तैर रहे थे। चीड़ के पेड़ों से घिरे, जिनकी चोटियाँ आकाश को अत्यंत कोमलता से छू रही थीं, वे मानो प्रकाश के फीके पड़ने के साथ ऊपर की ओर बढ़ते हुए प्रतीत हो रहे थे—जैसे कि वे लंगर डालने और अपनी मूल और निर्जन झील की धाराओं के बजाय स्वर्ग के रास्तों पर चलने के लिए तैयार हों।
और रंग-बिरंगे बादलों की पट्टियाँ, मानो लहराते हुए झंडे हों, तारों की ओर उनके प्रस्थान का संकेत दे रही थीं...

दृश्य की सुंदरता मन को विचित्र रूप से सुकून देने वाली थी। सिम्पसन ने मछली को धुएँ में पकाया और इस चक्कर में अपनी उंगलियाँ जला लीं, क्योंकि वह इसका आनंद लेने के साथ-साथ कड़ाही और आग को भी संभाल रहा था। फिर भी, उसके विचारों में एक और पहलू हमेशा बना हुआ था: मानव जीवन के प्रति उदासीनता, निर्दयी वीरानगी जो मनुष्य की परवाह नहीं करती थी। अब जब डेफैगो भी जा चुका था, तो उसकी घोर अकेलेपन की अनुभूति और भी गहरी हो गई, जब उसने अपने चारों ओर देखा और अपने साथी के लौटते कदमों की आहट सुनने की कोशिश की।
इस अनुभूति में आनंद था, फिर भी इसके साथ ही एक स्वाभाविक चिंता भी थी। और सहज रूप से उसके मन में यह विचार आया: "अगर कुछ हो गया और वह वापस नहीं आया तो मैं क्या कर सकता हूँ?"
उन्होंने अपनी मेहनत के फलस्वरूप भोजन का आनंद लिया, ढेर सारी मछली खाई और बिना दूध वाली चाय पी, जो इतनी कड़क थी कि तीस मील की कठिन यात्रा पूरी न करने वाले लोगों को भी मार सकती थी, क्योंकि उन्होंने रास्ते में बहुत कम खाया था। भोजन समाप्त होने पर, वे जलती हुई आग के चारों ओर बैठकर सिगरेट पीते और कहानियां सुनाते रहे, हंसते रहे, थके हुए अंगों को आराम देते रहे और कल की योजनाओं पर चर्चा करते रहे। डेफैगो का मूड बहुत अच्छा था, हालांकि उसे मूस के कोई निशान न मिलने से निराशा हुई थी। लेकिन अंधेरा हो चुका था और वह ज्यादा दूर नहीं गया था। उसका ब्रूले भी खराब हो गया था। उसके कपड़े और हाथ कोयले से सने हुए थे। सिम्पसन, उसे देखते हुए, उनकी स्थिति को नए सिरे से स्पष्ट रूप से समझ गया - जंगल में अकेले।
"डेफैगो," उसने थोड़ी देर बाद कहा, "ये जंगल, तुम्हें पता है, इतने बड़े हैं कि इनमें पूरी तरह से घर जैसा महसूस करना मुश्किल

है—मेरा मतलब है, आराम से रहना मुश्किल है!... हैं ना?" उसने बस उस पल के भाव को व्यक्त किया; वह उस गंभीरता, यहाँ तक कि उस संजीदगी के लिए बिल्कुल भी तैयार नहीं था जिसके साथ गाइड ने उसे अपने साथ लिया।
"आपने बिल्कुल सही कहा, सिम्पसन, बॉस," उसने अपनी गहरी भूरी आँखों से उसके चेहरे को घूरते हुए जवाब दिया, "और यही सच है। इनकी कोई सीमा नहीं है—बिल्कुल भी नहीं।" फिर उसने धीमी आवाज़ में मानो खुद से कहा, "बहुत से लोगों को यह पता चल गया है, और वे पूरी तरह से बिखर गए हैं!"
लेकिन उस व्यक्ति का गंभीर व्यवहार दूसरे को कुछ खास पसंद नहीं आया; यह इस माहौल के लिए कुछ ज्यादा ही उत्तेजक था; उसे अफसोस हुआ कि उसने यह विषय क्यों उठाया। उसे अचानक याद आया कि उसके चाचा ने उसे बताया था कि कभी-कभी लोग जंगल के एक अजीब से बुखार से ग्रस्त हो जाते हैं, जब निर्जन वीरान इलाकों का आकर्षण उन्हें इस कदर जकड़ लेता है कि वे आधे मोहित और आधे भ्रमित होकर मौत की ओर चल पड़ते हैं। और उसे यह आभास हुआ कि उसका साथी उस विचित्र स्वभाव से कुछ हद तक सहमत है। उसने बातचीत को दूसरे विषयों की ओर मोड़ दिया, जैसे हैंक और डॉक्टर की ओर, और मूस को सबसे पहले देखने की स्वाभाविक प्रतिद्वंद्विता की ओर।
"अगर वे पश्चिम की ओर चले गए," डेफैगो ने लापरवाही से कहा, "तो अब हमारे बीच साठ मील की दूरी है—और वो बूढ़ा पंक बीच के पड़ाव पर मछली और कॉफ़ी खा-खाकर अपना पेट भर रहा होगा।" वे इस बात पर एक साथ हँसे। लेकिन उन साठ मीलों के ज़िक्र ने सिम्पसन को फिर से उस विशाल भूमि का एहसास दिलाया जहाँ वे शिकार करते थे; साठ मील तो बस एक कदम था; दो सौ मील तो बस एक कदम से थोड़ा ही ज़्यादा था। खोए हुए शिकारियों की कहानियाँ लगातार उसकी यादों में उमड़ रही

थीं। विशाल जंगलों की सुंदरता से मोहित बेघर और भटकते हुए लोगों का जुनून और रहस्य उसकी आत्मा में इस कदर समा गया था कि वह सुखद नहीं लग रहा था। उसने सोचा कि क्या उसके साथी का मिजाज ही था जिसने इतनी ज़िद के साथ इस अप्रिय सुझाव को आमंत्रित किया। “अगर तुम ज़्यादा थके नहीं हो, तो डेफैगो, हमें एक गाना सुनाओ,” उसने पूछा; “वही पुराने घुमक्कड़ गीत जो तुमने पिछली रात गाए थे।” उसने अपना तंबाकू का थैला गाइड को दिया और फिर अपनी पाइप भरी, जबकि कनाडाई, बिना किसी हिचकिचाहट के, अपनी मधुर आवाज़ में झील के उस पार एक उदास, लगभग मायूस गीत गा रहा था, जिसे लकड़हारे और शिकारी अपने परिश्रम का बोझ हल्का करने के लिए गाते हैं। उसमें एक आकर्षक और रोमांटिक एहसास था, कुछ ऐसा जो पुराने ज़माने के अग्रदूतों के माहौल की याद दिलाता था, जब भारतीय और जंगल एक साथ जुड़े हुए थे, लड़ाइयाँ अक्सर होती थीं, और पुराना देश आज की तुलना में कहीं ज़्यादा दूर था। आवाज़ पानी पर मधुरता से फैल रही थी, लेकिन उनके पीछे का जंगल उसे एक ही झटके में निगल रहा था, जिससे न तो कोई गूंज सुनाई दे रही थी और न ही कोई प्रतिध्वनि।
तीसरे छंद के बीच में ही सिम्पसन ने कुछ असामान्य देखा—कुछ ऐसा जिसने दूर के दृश्यों से उसके विचारों को अचानक वापस ला दिया। उस आदमी की आवाज़ में एक अजीब बदलाव आ गया था। इससे पहले कि वह समझ पाता कि क्या हुआ है, उसे बेचैनी होने लगी और उसने जल्दी से ऊपर देखा तो पाया कि डेफैगो, गाते हुए भी, झाड़ियों में झाँक रहा था, मानो उसने कुछ सुना या देखा हो। उसकी आवाज़ धीमी होती गई— बिल्कुल शांत हो गई—फिर पूरी तरह बंद हो गई। उसी क्षण, आश्चर्यजनक रूप से सतर्क होकर, वह अपने पैरों पर खड़ा हो गया और हवा को सूंघने लगा। जैसे कोई कुत्ता शिकार को सूंघता है, वैसे

ही वह छोटी-छोटी, तेज़ साँसें लेकर अपनी नाक में हवा भरता रहा, ऐसा करते हुए वह तेज़ी से सभी दिशाओं में घूमता रहा, और अंत में झील के किनारे, पूर्व दिशा की ओर इशारा किया। यह एक अप्रिय रूप से संकेतपूर्ण और साथ ही असाधारण रूप से नाटकीय प्रदर्शन था। इसे देखते हुए सिम्पसन का दिल बुरी तरह धड़कने लगा।
"हे भगवान! तुमने मुझे कितना डरा दिया!" वह उसी क्षण उसके बगल में खड़ा होकर बोला और अंधेरे के सागर में पीछे मुड़कर देखने लगा। "क्या हुआ? क्या तुम डर गए हो—?"
सवाल उसके मुंह से निकलने से पहले ही उसे पता था कि यह मूर्खतापूर्ण है, क्योंकि जिसकी भी आंखें होतीं, वह देख सकता था कि कनाडाई का चेहरा एकदम सफेद पड़ गया था। धूप की जलन और आग की तेज रोशनी भी इसे छुपा नहीं सकती थी।
विद्यार्थी थोड़ा कांपने लगा, उसके घुटने थोड़े कमजोर पड़ गए। "क्या हुआ?" उसने जल्दी से दोहराया। "क्या तुम्हें मूस की गंध आ रही है? या कुछ अजीब, कुछ गड़बड़?" उसने सहज ही अपनी आवाज़ धीमी कर ली।
जंगल ने उन्हें घेर लिया था; पास के पेड़ों के तने आग की रोशनी में कांसे की तरह चमक रहे थे; उसके आगे अंधेरा छाया था, और जहाँ तक वह देख सकता था, मौत का सन्नाटा छाया हुआ था। उनके ठीक पीछे हवा का एक झोंका आया और एक पत्ता उठाकर उसे देखा, फिर बाकी पत्तों को बिना हिलाए धीरे से नीचे रख दिया। ऐसा लग रहा था मानो लाखों अदृश्य कारण मिलकर उस एक दृश्य प्रभाव को उत्पन्न कर रहे हों। उनके चारों ओर जीवन की हलचल हुई—और फिर गायब हो गई। डेफैगो अचानक मुड़ा; उसके चेहरे का पीलापन अब गंदा भूरा पड़ गया था।

"मैंने कभी नहीं कहा कि मैंने कुछ सुना या सूंघा," उसने धीमी और ज़ोरदार आवाज़ में कहा, उसकी आवाज़ में एक अजीब सा बदलाव था जिससे थोड़ी सी चुनौती झलक रही थी। "मैं तो बस इधर-उधर देख रहा था। जल्दी सवाल पूछना हमेशा गलती होती है।" फिर उसने अचानक, ज़ाहिर सी कोशिश के साथ, अपनी स्वाभाविक आवाज़ में कहा, "क्या आपके पास माचिस है, बॉस सिम्पसन?" और फिर उसने उस पाइप को जलाया जिसे उसने गाना शुरू करने से ठीक पहले आधा भर लिया था।
बिना एक भी शब्द बोले वे फिर से आग के पास बैठ गए। डेफैगो ने अपनी करवट बदली ताकि वह हवा की दिशा की ओर मुंह कर सके। क्योंकि एक नौसिखिए को भी यह पता चल जाता था। डेफैगो ने अपनी स्थिति इसलिए बदली ताकि वह सब कुछ सुन और सूंघ सके। और, चूंकि अब उसका मुंह झील की ओर था और उसकी पीठ पेड़ों की ओर थी, इसलिए यह स्पष्ट था कि जंगल में ऐसी कोई चीज नहीं थी जिसने उसकी अद्भुत रूप से प्रशिक्षित नसों को इतनी अजीब और अचानक चेतावनी दी हो।
"लगता है अब मेरा गाने का मन नहीं कर रहा," उसने थोड़ी देर बाद खुद ही कहा। "वो गाना कुछ ऐसी यादें ताजा कर देता है जो मुझे परेशान करती हैं; मुझे उसे गाना शुरू ही नहीं करना चाहिए था। वो मुझे तरह-तरह की बातें सोचने पर मजबूर कर देता है, समझे?" स्पष्ट था कि वह व्यक्ति अब भी किसी गहरी भावना से जूझ रहा था। वह दूसरे की नज़रों में खुद को दोषमुक्त करना चाहता था। लेकिन यह स्पष्टीकरण, जो कि सच का केवल एक अंश था, झूठ था, और वह भली- भांति जानता था कि सिम्पसन इससे धोखा नहीं खाएगा। क्योंकि जब वह वहाँ खड़े होकर हवा को सूंघ रहा था, तब उसके चेहरे पर छाए उस भयानक भय को कोई भी चीज़ समझा नहीं सकती थी। और कुछ भी—चाहे कितनी भी तेज़ आग हो, या सामान्य विषयों पर बातचीत—उस शिविर को पहले जैसा नहीं बना सकता था। एक अज्ञात भयावहता की छाया, जो

स्पष्ट रूप से प्रकट हुई थी, भले ही उसका अनुमान न लगाया जा सके, जो एक पल के लिए गाइड के चेहरे और हाव-भाव में झलकी थी, वह उसके साथी तक भी अस्पष्ट रूप से और इसलिए अधिक शक्तिशाली ढंग से पहुँच गई थी। गाइड द्वारा सच्चाई को छिपाने के स्पष्ट प्रयासों ने स्थिति को और भी बदतर बना दिया। इसके अलावा, युवक की बेचैनी को और बढ़ाने वाली बात यह थी कि उसे सवाल पूछने में बहुत कठिनाई हो रही थी, बल्कि असंभव सा लग रहा था, और उसे कारण के बारे में बिल्कुल भी जानकारी नहीं थी... भारतीय, जंगली जानवर, जंगल की आग— ये सब बातें उसके लिए बिल्कुल भी संभव नहीं थीं। उसकी कल्पना शक्ति ने पूरी कोशिश की, लेकिन व्यर्थ...

फिर भी, किसी न किसी तरह, लंबे समय तक धूम्रपान करने, बातें करने और बड़ी आग के सामने धूप सेंकने के बाद, उनके शांत शिविर पर अचानक छाए साये का साया धीरे-धीरे हटने लगा। शायद डेफैगो के प्रयासों या उसके शांत और सामान्य रवैये की वापसी ने ऐसा किया; शायद सिम्पसन ने खुद ही मामले को सच्चाई से कहीं ज़्यादा बढ़ा- चढ़ाकर पेश किया था; या हो सकता है कि जंगल की जीवंत हवा में उपचार की शक्ति थी। कारण जो भी हो, तत्काल भय की भावना उतनी ही रहस्यमय तरीके से गायब हो गई जितनी रहस्यमय तरीके से वह आई थी, क्योंकि उसे फिर से जगाने वाली कोई घटना नहीं हुई। सिम्पसन को लगने लगा कि उसने खुद को एक बच्चे की तरह बेवजह डरने दिया था। उसने इसका कारण आंशिक रूप से उस जंगली और विशाल दृश्य से उत्पन्न अवचेतन उत्तेजना, आंशिक रूप से एकांत के प्रभाव और आंशिक रूप से अत्यधिक थकान को माना। गाइड के चेहरे की वह पीलापन, बेशक, असामान्य रूप से समझाना मुश्किल था, फिर भी यह

किसी न किसी तरह आग की रोशनी के प्रभाव या उसकी अपनी कल्पना के कारण हो सकता था... उसने इसे संदेह का लाभ दिया; वह स्कॉटिश था। जब कोई असामान्य भावना गायब हो जाती है, तो मन हमेशा उसके कारणों को समझाने के लिए दर्जनों तरीके ढूंढ लेता है... सिम्पसन ने आखिरी पाइप जलाया और मन ही मन हंसने की कोशिश की। स्कॉटलैंड लौटने पर यह एक अच्छी कहानी बन सकती थी। उसे एहसास नहीं था कि यह हंसी इस बात का संकेत थी कि डर अब भी उसकी आत्मा की गहराइयों में छिपा हुआ था—दरअसल, यह तो बस उन सामान्य संकेतों में से एक था जिनसे एक गंभीर रूप से भयभीत व्यक्ति खुद को यह समझाने की कोशिश करता है कि वह इतना भयभीत नहीं है।
लेकिन डेफैगो ने वह धीमी हंसी सुनी और आश्चर्य से ऊपर देखा। दोनों आदमी सोने से पहले बगल-बगल खड़े होकर अंगारों को इधर-उधर उछाल रहे थे। रात के दस बज रहे थे—शिकारियों के लिए इतना देर तक जागना ठीक नहीं था।
"तुम्हें क्या बात परेशान कर रही है?" उसने अपने सामान्य स्वर में, लेकिन गंभीरता से पूछा।
"मैं—मैं उस समय घर पर हमारे छोटे खिलौने वाले जंगल के बारे में सोच रहा था," सिम्पसन हकलाते हुए बोला, फिर उस बात पर वापस आया जो वास्तव में उसके दिमाग में हावी थी, और सवाल से चौंक गया, "और उनकी तुलना—इन सब से कर रहा था," और उसने बुश की ओर इशारा करने के लिए अपना हाथ घुमाया।
इसके बाद कुछ देर का सन्नाटा छा गया, इस दौरान दोनों में से किसी ने कुछ नहीं कहा।
"फिर भी, अगर मैं तुम्हारी जगह होता, तो इस पर नहीं हंसता," डेफैगो ने सिम्पसन के कंधे के ऊपर से अंधेरे में देखते हुए कहा।

"वहाँ ऐसी जगहें हैं जहाँ कोई कभी नहीं देख पाएगा—और न ही कोई जानता है कि वहाँ क्या रहता है।"
"बहुत बड़ा—बहुत दूर?" गाइड के हावभाव में यह सुझाव बहुत बड़ा और भयावह था।
डेफैगो ने सिर हिलाया। उसके चेहरे पर उदासी छाई हुई थी। वह भी बेचैन था। उस नौजवान को समझ आ गया था कि इतने बड़े भीतरी इलाके में शायद जंगल के ऐसे गहरे हिस्से हों, जिनके बारे में दुनिया में कभी किसी को पता न हो या कोई वहाँ कदम न रखे। यह सोच उसे बिल्कुल भी अच्छी नहीं लगी। उसने ऊँची आवाज़ में, खुशी-खुशी कहा कि अब सोने का समय हो गया है। लेकिन गाइड वहीं रुका रहा, आग को कुरेदता रहा, पत्थरों को बेवजह सजाता रहा, और दर्जनों ऐसे काम करता रहा जिनकी सच में कोई ज़रूरत नहीं थी। ज़ाहिर है, वह कुछ कहना चाहता था, लेकिन उसे यह बात कहने में मुश्किल हो रही थी। "कहिए, बॉस सिम्पसन," जैसे ही चिंगारियों की आखिरी बौछार हवा में उठी, उसने अचानक कहना शुरू किया, "आपको—कुछ भी गंध तो नहीं आ रही है ना—कुछ भी नहीं, मतलब?" सिम्पसन को एहसास हुआ कि इस आम से सवाल के पीछे उसके मन में एक बेहद गंभीर विचार छिपा हुआ था। उसकी पीठ में सिहरन दौड़ गई।
"बस जलती हुई लकड़ी है," उसने दृढ़ता से जवाब दिया और अंगारों पर फिर से लात मारी। उसके अपने ही पैर की आवाज सुनकर वह चौंक गया। "और पूरी शाम तुमने कुछ भी नहीं सूंघा—कुछ भी नहीं?" गाइड ने अँधेरे में से उसे देखते हुए पूछा; "कुछ भी असाधारण नहीं, और ऐसा कुछ भी नहीं जो तुमने पहले कभी सूंघा हो?"
"नहीं, नहीं यार; बिलकुल कुछ नहीं!" उसने आधे गुस्से में आक्रामक ढंग से जवाब दिया।

डेफैगो का चेहरा खिल उठा। "यह तो अच्छी बात है!" उसने स्पष्ट राहत के साथ कहा। "यह सुनकर अच्छा लगा।"
"क्या तुमने किया है?" सिम्पसन ने तीखे स्वर में पूछा, और उसी क्षण उसे अपने प्रश्न पर पछतावा हुआ।
अंधेरे में कनाडाई व्यक्ति करीब आया। उसने अपना सिर हिलाया। "मुझे लगता है नहीं," उसने कहा, हालांकि उसके चेहरे पर कोई प्रबल विश्वास नहीं था। "शायद मेरे उस गाने का ही असर हुआ होगा। यह वही गाना है जो लकड़ी के शिविरों और ऐसी ही सुनसान जगहों पर गाया जाता है, जब उन्हें डर लगता है कि वेंडिगो कहीं आसपास घूम रहा है और तेजी से अपना काम कर रहा है।"
"और वेंडिगो आखिर है क्या?" सिम्पसन ने चिढ़कर पूछा, क्योंकि वह फिर से अपने अंदर उठने वाली उस अचानक सिहरन को रोक नहीं पा रहा था। वह जानता था कि वह उस आदमी के डर और उसके कारण के करीब पहुँच चुका है। फिर भी, एक तीव्र जिज्ञासा ने उसके विवेक और डर पर काबू पा लिया।
डेफैगो तेज़ी से मुड़ा और उसकी ओर ऐसे देखा मानो वह अचानक चीखने वाला हो। उसकी आँखें चमक रही थीं, लेकिन उसका मुँह खुला हुआ था। फिर भी उसने बस इतना ही कहा, या यूँ कहें कि फुसफुसाया, क्योंकि उसकी आवाज़ बहुत धीमी हो गई थी: "यह कुछ नहीं है—बस वही है जो वे निकम्मे लोग शराब के नशे में चूर होने पर मान लेते हैं—एक बड़ा सा जानवर जो ऊपर रहता है," उसने अपना सिर उत्तर की ओर झटका, "बिजली की तरह तेज़, और जंगल में किसी भी चीज़ से बड़ा, और देखने में अच्छा नहीं माना जाता—बस इतना ही!"
“एक देहाती अंधविश्वास—” सिम्पसन ने कहना शुरू किया और गाइड का हाथ छुड़ाने के लिए जल्दी से तंबू की ओर बढ़ा। “चलो, चलो, भगवान

के लिए जल्दी करो और लालटेन जलाओ! अगर हमें कल सुबह सूरज उगने के साथ उठना है तो अब हमें बिस्तर पर जाकर सो जाना चाहिए....”
गाइड उसके ठीक पीछे था। अंधेरे में से उसने जवाब दिया, "मैं आ रहा हूँ, मैं आ रहा हूँ।" थोड़ी देर बाद वह लालटेन लेकर प्रकट हुआ और उसे तंबू के सामने वाले खंभे की कील से लटका दिया। ऐसा करते ही सौ पेड़ों की छायाएँ तेज़ी से अपनी जगह बदल गईं, और जब वह रस्सी पर लड़खड़ाते हुए तेज़ी से अंदर कूदा, तो पूरा तंबू ऐसे काँप उठा जैसे हवा का कोई झोंका आया हो।
दोनों पुरुष बिना कपड़े उतारे, बड़ी चतुराई से सँवारी गई बलसम की शाखाओं से बने अपने बिस्तरों पर लेट गए। अंदर सब कुछ गर्म और आरामदायक था, लेकिन बाहर घने पेड़ों का संसार उन्हें चारों ओर से घेर रहा था, अपनी लाखों छायाओं को समेटे हुए, और उस छोटे से तंबू को ढक रहा था जो विशाल जंगल के सागर के सामने एक नन्हे सफेद खोल की तरह खड़ा था।
लेकिन भीतर मौजूद उन दो अकेले लोगों के बीच, एक और साया मंडरा रहा था जो रात का साया नहीं था। यह उस विचित्र भय का साया था, जो कभी पूरी तरह से दूर नहीं हुआ था, और जो डेफैगो के गायन के बीच अचानक उस पर टूट पड़ा था। और सिम्पसन, जो वहाँ लेटा हुआ था, तम्बू के खुले पर्दे से अँधेरे को देख रहा था, नींद की सुगंधित गहराई में डूबने के लिए तैयार था, तभी उसे सबसे पहले उस प्राचीन जंगल की अनूठी और गहरी शांति का एहसास हुआ, जब हवा का कोई झोंका नहीं चलता... और जब रात का अपना एक भार और सार होता है जो आत्मा में समाकर उसे एक पर्दे से ढक लेता है... फिर नींद ने उसे अपने शिकंजे में ले लिया...

तृतीय

कम से कम उसे तो ऐसा ही लगा। फिर भी यह सच था कि तंबू के दरवाजे के ठीक बाहर पानी की लहरें उसकी धीमी होती नब्ज़ों के साथ ताल मिला रही थीं, जब उसे एहसास हुआ कि वह आँखें खुली रखकर लेटा हुआ है और छोटी-छोटी लहरों की छप-छप और गुनगुनाहट के बीच एक और आवाज़ बड़ी चालाकी से कोमल होकर सुनाई देने लगी है।
और, इससे पहले कि वह समझ पाता कि यह आवाज़ क्या है, इसने उसके भीतर दया और भय की भावनाएँ जगा दीं। उसने ध्यान से सुना, हालाँकि शुरू में व्यर्थ ही, क्योंकि बहते खून की आवाज़ उसके कानों में बहुत तेज़ गूंज रही थी। क्या यह आवाज़ झील से आ रही थी, या जंगल से?...
फिर अचानक, दिल की धड़कन तेज़ हो गई और उसे एहसास हुआ कि कोई आवाज़ उसके पास ही तम्बू में आ रही है; और जब उसने बेहतर सुनने के लिए करवट बदली, तो आवाज़ साफ़ सुनाई दी, दो फीट से भी कम दूरी पर। यह रोने की आवाज़ थी; डेफैगो टहनियों के बिस्तर पर अंधेरे में ऐसे सिसक रहा था मानो उसका दिल टूट जाएगा, और ऐसा लग रहा था जैसे उसने अपने मुँह पर कंबल ठूँस रखे हों ताकि उसकी आवाज़ दब जाए।
और सोचने-समझने से पहले ही, उनके मन में एक गहरी और मार्मिक कोमलता का भाव उमड़ आया। चारों ओर फैली वीरानगी के बीच सुनाई देने वाली यह अंतरंग, मानवीय ध्वनि, दया जगा गई। यह कितनी विचित्र, कितनी दयनीय रूप से विचित्र और कितनी व्यर्थ थी! इस विशाल और निर्दयी वीरान जगह में आँसू: इनका क्या लाभ? उन्होंने अटलांटिक महासागर के बीच रोते हुए एक छोटे बच्चे के बारे में

सोचा... फिर, और अधिक स्पष्टता के साथ, और जो कुछ पहले हो चुका था उसकी याद के साथ, उन पर भय छा गया, और उनका खून जम गया।
“डेफैगो,” उसने फुसफुसाते हुए जल्दी से पूछा, “क्या बात है?” उसने अपनी आवाज़ को बहुत कोमल बनाने की कोशिश की। “क्या तुम दुखी हो—नाखुश हो—?” कोई जवाब नहीं आया, और आवाज़ें अचानक बंद हो गईं। उसने अपना हाथ बढ़ाया और उसे छुआ। शरीर में कोई हलचल नहीं हुई।
"क्या तुम जाग रहे हो?" क्योंकि उसे लगा कि वह आदमी नींद में रो रहा है। "क्या तुम्हें ठंड लग रही है?" उसने देखा कि उसके नंगे पैर तम्बू के मुँह से बाहर निकले हुए थे। उसने अपने कंबल की एक और तह उन पर डाल दी। गाइड अपने बिस्तर में नीचे खिसक गया था, और ऐसा लग रहा था कि डालियाँ भी उसके साथ घिसट गई हों। उसे डर था कि कहीं वह जाग न जाए, इसलिए उसने शव को वापस खींचने की हिम्मत नहीं की।
उसने धीरे से एक-दो सवाल पूछने की हिम्मत की, लेकिन कई मिनट तक इंतजार करने के बावजूद न तो कोई जवाब आया और न ही कोई हलचल। थोड़ी देर बाद उसे उसकी नियमित और शांत साँसें सुनाई दीं, और उसने अपना हाथ फिर से धीरे से उसकी छाती पर रखा, और नीचे की ओर लगातार ऊपर-नीचे होते हुए महसूस किया।
"अगर कुछ गड़बड़ हो तो मुझे बताना," उसने फुसफुसाते हुए कहा, "या अगर मैं कुछ कर सकूँ। अगर तुम्हें कुछ अजीब लगे तो मुझे तुरंत जगा देना।"
उसे समझ नहीं आ रहा था कि क्या कहे। वह फिर लेट गया, सोचता रहा कि आखिर इसका मतलब क्या है। ज़ाहिर है, डेफैगो नींद में रो रहा था। किसी सपने ने उसे परेशान किया था। फिर भी, वह जीवन भर उस दयनीय

रोने की आवाज़ और उस एहसास को नहीं भूल पाएगा कि मानो पूरा भयानक जंगल उसे सुन रहा हो...
उसका अपना मन लंबे समय तक हाल की घटनाओं में उलझा रहा, जिनमें से यह एक रहस्यमय घटना के रूप में सामने आई, और यद्यपि उसकी तर्कशक्ति ने सभी अवांछित सुझावों को सफलतापूर्वक खारिज कर दिया, फिर भी बेचैनी की एक अनुभूति बनी रही, जो दूर होने का विरोध कर रही थी, बहुत गहरी जड़ें जमाए हुए - सामान्य से परे विचित्र।

चतुर्थ

लेकिन अंततः नींद सभी भावनाओं से श्रेष्ठ सिद्ध होती है। उसके विचार जल्द ही फिर भटकने लगे; वह वहाँ लेटा रहा, गर्म और बेहद थका हुआ; रात ने उसे सुकून और आराम दिया, यादों और भय की धार को कुंद कर दिया। आधे घंटे बाद वह अपने आसपास की बाहरी दुनिया की हर चीज से बेखबर हो गया।
लेकिन इस मामले में नींद ही उसकी सबसे बड़ी दुश्मन थी, जो हर तरह के खतरे को छुपा रही थी और उसकी नसों में उठने वाली चेतावनी को दबा रही थी।
जैसे कभी-कभी बुरे सपने में घटनाएँ एक के बाद एक भयानक वास्तविकता का आभास देती हैं, फिर भी कोई असंगत विवरण पूरे दृश्य को अपूर्णता और छलावे का आरोप लगाता है, वैसे ही अब जो घटनाएँ घटीं, यद्यपि वे वास्तव में हुई थीं, उन्होंने मन को किसी तरह यह विश्वास दिला दिया कि उन्हें समझाने वाला विवरण भ्रम में छूट गया था, और इसलिए वे आंशिक रूप से ही सत्य थीं, बाकी भ्रम। सोते हुए व्यक्ति के मन के भीतर कहीं न कहीं कुछ जागृत रहता है, जो निर्णय प्रकट करने के लिए तैयार रहता है। "यह सब पूरी तरह से वास्तविक नहीं है; जब तुम जागोगे तो समझ जाओगे।" और इस तरह, एक तरह से, सिम्पसन के साथ भी ऐसा ही हुआ। घटनाएँ, अपने आप में पूरी तरह से अस्पष्ट या अविश्वसनीय नहीं थीं, फिर भी उन्हें देखने और सुनने वाले व्यक्ति के लिए वे ठंडे भयावहता के अलग-अलग तथ्यों की एक श्रृंखला बनी रहीं, क्योंकि वह छोटा सा टुकड़ा जो पहेली को स्पष्ट कर सकता था, छिपा हुआ था या अनदेखा कर दिया गया था।

जहां तक उसे याद है, तंबू के अंदर दरवाजे की ओर नीचे की ओर एक ज़ोरदार हलचल ने सबसे पहले उसे जगाया और उसे एहसास दिलाया कि उसका साथी उसके बगल में सीधा बैठा कांप रहा है। कई घंटे बीत चुके होंगे, क्योंकि भोर की हल्की रोशनी में ही उसका आकार तंबू के ऊपर दिखाई दिया। इस बार वह आदमी रो नहीं रहा था; वह पत्ते की तरह कांप रहा था; यह कंपकंपी उसे कंबल के आर-पार अपने पूरे शरीर में साफ महसूस हो रही थी। डेफैगो सुरक्षा के लिए उससे लिपट गया था, किसी ऐसी चीज़ से दूर हट रहा था जो छोटे से तंबू के दरवाज़े के पास छिपी हुई थी।
इसके बाद सिम्पसन ने ऊँची आवाज़ में कुछ सवाल पूछा—जागने के शुरुआती खुमार में उसे ठीक से याद नहीं कि उसने क्या पूछा था— लेकिन उस आदमी ने कोई जवाब नहीं दिया। भयानक दुःस्वप्न का माहौल और एहसास उसे बुरी तरह से घेरे हुए था, जिससे हिलना-डुलना और बोलना दोनों मुश्किल हो रहे थे। दरअसल, पहले तो उसे यह भी नहीं पता था कि वह कहाँ है—किसी पुराने शिविर में है या एबरडीन में अपने घर पर बिस्तर पर। यह उलझन उसे बहुत परेशान कर रही थी। और फिर—ऐसा लगा जैसे उसके जागने के लगभग साथ ही—बाहर भोर की गहरी शांति एक बेहद असामान्य आवाज़ से टूट गई। यह बिना किसी चेतावनी या सुनाई देने वाले आभास के आई; और यह अवर्णनीय रूप से भयानक थी। सिम्पसन का कहना है कि यह एक आवाज़ थी, संभवतः एक इंसान की आवाज़; कर्कश लेकिन पीड़ादायक—तंबू के ठीक बाहर, ज़मीन पर नहीं बल्कि ऊपर से आती हुई एक कोमल, गर्जनापूर्ण आवाज़, बहुत तेज़, फिर भी किसी अजीब तरीके से बेहद मर्मस्पर्शी और मोहक रूप से मधुर। यह तीन अलग-अलग स्वरों या चीखों में गूंजी, जो किसी अजीब तरीके से, दूर की कौड़ी होते हुए भी, गाइड के नाम से मिलती-जुलती थी: "डे-फा-गो!"

विद्यार्थी स्वीकार करता है कि वह इसका सटीक वर्णन नहीं कर सकता, क्योंकि यह उसके जीवन में सुनी गई किसी भी ध्वनि से भिन्न थी, और इसमें विपरीत गुणों का मिश्रण था। वह इसे "एक प्रकार की हवा जैसी, रोने वाली आवाज़" कहता है, "जैसे किसी अकेली और अनियंत्रित, जंगली और भयानक शक्ति वाली चीज़ की आवाज़ हो..."
और, सन्नाटे के गहरे अंधकार में डूबने से पहले ही, उसके बगल में खड़ा गाइड एक अस्पष्ट लेकिन अस्पष्ट चीख के साथ उछल पड़ा। वह ज़ोर से तंबू के खंभे से टकराया, जिससे पूरा ढांचा हिल गया, उसने और जगह पाने के लिए अपनी बाहें बेतहाशा फैला दीं और चिपके हुए कंबलों से अपने पैरों को छुड़ाने के लिए बेतहाशा लात मारी। एक या शायद दो पल के लिए, वह दरवाजे के पास सीधा खड़ा रहा, भोर की हल्की रोशनी में उसकी आकृति धुंधली सी लग रही थी; फिर, उग्र और तेज़ गति से, इससे पहले कि उसका साथी उसे रोकने के लिए हाथ बढ़ा पाता, वह तंबू के पर्दों से छलांग लगाकर गायब हो गया। और जैसे ही वह गया - इतनी आश्चर्यजनक गति से कि दूर से उसकी आवाज़ धीमी होती सुनाई दे रही थी - उसने पीड़ा और भय से भरी आवाज़ में पुकारा, जिसमें उसी समय आनंद की उन्मादी उमंग जैसी कोई अजीब सी भावना भी थी।
"ओह! ओह! मेरे अग्नि जैसे पैर! मेरे जलते हुए अग्नि जैसे पैर! ओह! ओह! यह ऊँचाई और प्रचंड गति!"
और फिर दूरी ने उसे जल्दी से भुला दिया, और सुबह-सुबह की गहरी खामोशी पहले की तरह जंगल पर छा गई।
यह सब इतनी तेज़ी से हुआ कि अगर उसके बगल में खाली बिस्तर न होता, तो सिम्पसन लगभग यही मान लेता कि यह नींद में देखे गए किसी बुरे सपने की याद है। उसे अब भी उस गायब हुए शरीर का गर्म स्पर्श अपने बगल में महसूस हो रहा था; मुड़े हुए कंबल ढेर में पड़े थे;

इसलिए उसने प्रयास किया, हालांकि वह एक गलत और व्यर्थ प्रयास था। चारों ओर घने पेड़ों के बीच, पीछे से पानी की चादर उसे रोक रही थी, और उसके खून में उस भयानक चीख का खौफ था, उसने वही किया जो कोई भी अनुभवहीन व्यक्ति ऐसी घबराहट में करता: वह दिशा का कोई ज्ञान न होने के कारण एक पागल बच्चे की तरह इधर-उधर भागा, और लगातार जोर-जोर से मार्गदर्शक का नाम पुकारता रहा।
"डेफैगो! डेफैगो! डेफैगो!" वह चिल्लाया, और पेड़ भी उतनी ही बार उसका नाम दोहराते रहे जितनी बार वह चिल्लाता था, बस थोड़ी नरमी से—"डेफैगो! डेफैगो! डेफैगो!"
वह बर्फ के टुकड़ों के पार थोड़ी दूर तक फैले रास्ते का पीछा करता रहा, लेकिन फिर घने पेड़ों के बीच से रास्ता भटक गया, जहाँ बर्फ टिक नहीं सकती थी। वह तब तक चिल्लाता रहा जब तक उसकी आवाज बैठ नहीं गई, और उस निर्मम, सुनती हुई दुनिया में अपनी ही आवाज से डरने लगा। उसकी घबराहट उसके प्रयासों की तीव्रता के अनुपात में बढ़ती गई। उसकी पीड़ा असहनीय रूप से बढ़ गई, अंततः उसके सारे प्रयास विफल हो गए, और अत्यधिक थकावट के कारण वह वापस शिविर की ओर चल पड़ा। यह आश्चर्य की बात है कि वह अपना रास्ता कैसे ढूंढ पाया। बड़ी मुश्किल से, और अनगिनत गलत सुरागों के बाद, उसने अंततः पेड़ों के बीच सफेद तंबू देखा, और इस तरह सुरक्षित स्थान पर पहुँच गया।
थकान ने अपना असर दिखाया और वह शांत हो गया। उसने आग जलाई और नाश्ता किया। गर्म कॉफी और बेकन ने उसमें थोड़ी समझदारी और विवेक जगाया और उसे एहसास हुआ कि वह बचकाना व्यवहार कर रहा था। अब उसने स्थिति का सामना संयम से करने का एक और, और अधिक सफल प्रयास किया, और अपने स्वाभाविक साहसी स्वभाव के कारण उसने फैसला किया कि उसे पहले यथासंभव अच्छी तरह से खोजबीन करनी

चाहिए, और अगर इसमें सफलता नहीं मिली, तो उसे किसी भी तरह से अपने घर के शिविर तक पहुंचना होगा और मदद लानी होगी।
और उसने यही किया। अपने साथ भोजन, माचिस और राइफल लेकर, और वापसी की यात्रा के लिए पेड़ों पर निशान बनाने के लिए एक छोटी कुल्हाड़ी लेकर वह चल पड़ा। जब वह चला तब आठ बज रहे थे, आसमान में बादल नहीं थे और सूरज पेड़ों की चोटियों पर चमक रहा था। आग के पास एक खंभे से बंधा हुआ उसने एक नोट छोड़ा ताकि अगर डेफैगो उसके जाने के दौरान वापस आए तो उसे पता चल जाए।
इस बार, एक सुनियोजित योजना के अनुसार, उसने एक नई दिशा पकड़ी, जिसका उद्देश्य एक विस्तृत चक्कर लगाना था जो देर-सवेर मार्गदर्शक के पदचिह्नों को काटता हुआ आगे बढ़ेगा; और, एक चौथाई मील चलने से पहले ही उसे बर्फ में एक बड़े जानवर के पदचिह्न मिले, और उसके बगल में हल्के और छोटे पदचिह्न जो निस्संदेह मानव पैरों के थे—डेफैगो के पैर। उसे जो राहत मिली वह स्वाभाविक थी, हालांकि क्षणिक थी; क्योंकि पहली नज़र में ही उसने इन पदचिह्नों में पूरे मामले का एक सरल स्पष्टीकरण देख लिया: ये बड़े निशान निश्चित रूप से एक नर मूस द्वारा छोड़े गए थे जो हवा के विपरीत दिशा में भटकते हुए शिविर में आ गया था, और जैसे ही उसे अपनी गलती का एहसास हुआ, उसने चेतावनी और खतरे की अपनी अनोखी चीख निकाली। डेफैगो, जिसमें शिकार की प्रवृत्ति असाधारण रूप से विकसित थी, ने घंटों पहले ही हवा के साथ आते हुए उस जानवर की गंध पहचान ली थी। उसकी उत्तेजना और गायब होने का कारण, निश्चित रूप से, उसके—
फिर, जिस असंभव व्याख्या को उसने समझने की कोशिश की थी, वह धुंधली पड़ गई, क्योंकि सामान्य ज्ञान ने उसे निर्दयता से दिखा दिया कि इनमें से कुछ भी सच नहीं था। कोई भी मार्गदर्शक, विशेष

रूप से डेफैगो जैसा मार्गदर्शक, इतना अतार्किक व्यवहार नहीं कर सकता था, यहाँ तक कि अपनी राइफल के बिना ही चला गया...! जब उसे सारी बातें याद आईं, तो इस पूरे मामले को और भी जटिल तरीके से समझने की ज़रूरत थी—डर की चीख, अचंभित भाषा, जब उसकी नाक ने पहली बार नई गंध को महसूस किया तो उस व्यक्ति का भयभीत चेहरा; अंधेरे में दबी हुई सिसकियाँ, और—क्योंकि यह भी अब उसे धुंधला- सा याद आ रहा था—उस व्यक्ति की इस विशेष इलाके के प्रति शुरुआती अरुचि...
इसके अलावा, अब जब उसने उन्हें और करीब से देखा, तो ये किसी नर मूस के पदचिह्न बिल्कुल नहीं थे! हैंक ने उसे बैल के खुरों की रूपरेखा समझाई थी, बल्कि गाय या बछड़े के खुरों की भी; उसने उन्हें बर्च की छाल की एक पट्टी पर स्पष्ट रूप से बनाया था। और ये पदचिह्न बिल्कुल अलग थे। ये बड़े, गोल, चौड़े थे और नुकीले खुरों जैसी कोई आकृति नहीं थी। उसने एक पल के लिए सोचा कि क्या भालू के पदचिह्न ऐसे ही होते हैं। उसे कोई और जानवर याद नहीं आ रहा था, क्योंकि कैरिबू इस मौसम में इतनी दूर दक्षिण में नहीं आते, और अगर आते भी तो खुरों के निशान छोड़ जाते।
ये अशुभ संकेत थे—बर्फ पर लिखे ये रहस्यमयी निशान, जिन्हें उस अज्ञात प्राणी ने छोड़ा था जिसने एक इंसान को उसकी सुरक्षा से दूर ले जाने का बहला-फुसला लिया था—और जब उसने अपनी कल्पना में भोर की शांति को भंग करने वाली उस डरावनी आवाज़ के साथ इन्हें जोड़ा, तो एक क्षणिक चक्कर ने उसके दिमाग को हिला दिया, जिससे वह एक बार फिर असहनीय रूप से परेशान हो गया। उसने इस सब के खतरे को महसूस किया। और, निशानों को और करीब से देखने के लिए झुकते हुए, उसे उस मीठी लेकिन तीखी गंध की हल्की सी आभा महसूस हुई, जिससे वह तुरंत सीधा हो गया, मानो उसे मतली हो रही हो।

पीछा करने में उसे कोई कठिनाई नहीं हुई। जहां भी पेड़ अनुमति देते थे, वे सीधी रेखा की तरह जाती थीं। जल्द ही कदमों की लंबाई बढ़ने लगी, और अंत में वे इतने बड़े हो गए कि किसी भी सामान्य जानवर के लिए ऐसा करना बिल्कुल असंभव लग रहा था। वे विशाल छलांगों की तरह हो गए। उसने इनमें से एक छलांग को मापा, और हालांकि वह जानता था कि अठारह फीट की वह "लंबाई" किसी न किसी तरह गलत होनी चाहिए, फिर भी वह यह समझने में पूरी तरह असमर्थ था कि उसे दोनों छोरों के बीच बर्फ पर कोई निशान क्यों नहीं मिले। लेकिन जिस बात ने उसे और भी ज्यादा हैरान कर दिया, जिससे उसे लगा कि उसकी दृष्टि पूरी तरह से गलत हो गई है, वह यह थी कि डेफैगो के कदम भी उसी तरह बढ़ते गए, और अंत में उसने भी उतनी ही अविश्वसनीय दूरी तय की। ऐसा लग रहा था मानो उस विशालकाय जानवर ने उसे अपने साथ उठा लिया हो और इन आश्चर्यजनक दूरियों को पार करा दिया हो। सिम्पसन, जिसके हाथ-पैर काफी लंबे थे, ने पाया कि वह दौड़कर भी आधी दूरी तय नहीं कर सकता।
और इन विशाल पदचिह्नों का दृश्य, जो अगल-बगल बने हुए थे, एक भयानक यात्रा के मूक प्रमाण थे जिसमें आतंक या पागलपन ने असंभव परिणामों को जन्म दिया था, अत्यंत मार्मिक था। इसने उसकी आत्मा की गहराइयों में उसे झकझोर दिया। यह सबसे भयानक दृश्य था जिसे उसकी आँखों ने कभी देखा था। वह यंत्रवत, लगभग अनमने ढंग से उनका अनुसरण करने लगा, बार-बार अपने कंधे के पीछे झाँकता रहता कि कहीं कोई विशाल पदचिह्न उसका भी पीछा तो नहीं कर रहा है... और जल्द ही उसे यह एहसास नहीं रहा कि ये पदचिह्न क्या दर्शाते हैं — बर्फ पर किसी अनाम और अनियंत्रित प्राणी द्वारा छोड़े गए ये निशान, हमेशा उसके साथ मौजूद उस छोटे फ्रांसीसी कनाडाई, उसके मार्गदर्शक, उसके साथी, उस व्यक्ति के पदचिह्नों के साथ, जिसने

कुछ घंटे पहले उसके साथ तंबू साझा किया था, बातें की थीं, हँसा था, यहाँ तक कि उसके बगल में गाना भी गाया था...

वी

उसकी उम्र और अनुभवहीनता को देखते हुए, शायद केवल एक चतुर स्कॉट ही, जो सामान्य ज्ञान और तर्क में निपुण हो, उस संतुलन को बनाए रख सकता था जो इस युवक ने किसी न किसी तरह पूरे साहसिक कार्य के दौरान बनाए रखा। अन्यथा, आगे बढ़ते हुए उसने जो दो बातें देखीं, वे उसे राइफल की बट पर और कसकर पकड़ने के बजाय, सीधे अपने तंबू की अपेक्षाकृत सुरक्षित जगह पर वापस भेज देतीं, जबकि उसका हृदय, वी किर्क के लिए तना हुआ, एक अनकही प्रार्थना को स्वर्ग तक पहुंचा देता। उसने देखा कि दोनों रास्तों में बदलाव आ गया था, और यह बदलाव, जहाँ तक उस व्यक्ति के कदमों का संबंध था, किसी अस्पष्ट तरीके से - भयावह था।
सबसे पहले उसने बड़े-बड़े पदचिह्नों में यह देखा, और काफी देर तक उसे अपनी आँखों पर विश्वास नहीं हुआ। क्या यह उड़ते हुए पत्तों का अजीबोगरीब प्रकाश और छाया का प्रभाव था, या किनारों पर बारीक पिसे हुए चावल की तरह बहती सूखी बर्फ की वजह से छाया और उजाले पड़ रहे थे? या वास्तव में यह इसलिए था कि बड़े निशानों का रंग हल्का पड़ गया था? क्योंकि जानवर के गहरे गड्ढों के चारों ओर अब एक रहस्यमय, लालिमा छाई हुई थी, जो बर्फ के रंग से ज़्यादा प्रकाश के प्रभाव जैसी लग रही थी। हर निशान पर यह छाया हुई थी, और बढ़ती जा रही थी—यह धुंधली, आग जैसी चमक जो तस्वीर में एक नया भयावह रूप जोड़ रही थी।
लेकिन जब वह इसे पूरी तरह से समझाने या इस पर विश्वास करने में असमर्थ होकर, अन्य पदचिह्नों की ओर मुड़ा, यह देखने के लिए कि क्या उनमें भी इसी तरह के प्रमाण हैं, तो उसने पाया कि उनमें इस बीच एक ऐसा परिवर्तन आ चुका था जो कहीं अधिक भयावह था और कहीं

अधिक डरावने संकेत दे रहा था। क्योंकि, अंतिम सौ गज के आसपास, उसने देखा कि वे धीरे-धीरे मूल पदचिह्न के समान दिखने लगे थे। परिवर्तन सूक्ष्म रूप से हुआ था, फिर भी स्पष्ट था। यह देखना कठिन था कि परिवर्तन कहाँ से शुरू हुआ। हालाँकि, परिणाम निर्विवाद था। छोटे, साफ-सुथरे, अधिक स्पष्ट रूप से बने हुए, वे अब अपने बगल के बड़े पदचिह्नों की सटीक और सावधानीपूर्वक नकल बन गए थे। इसलिए, उन्हें बनाने वाले पैरों के निशान भी बदल गए थे। और यह देखकर उसके मन में घृणा और भय का भाव उमड़ पड़ा। सिम्पसन पहली बार हिचकिचाया; फिर, अपनी घबराहट और असमंजस पर शर्मिंदा होकर, कुछ हड़बड़ी भरे कदम आगे बढ़ाए; अगले ही पल वह एकदम रुक गया। ठीक उसके सामने पगडंडी के सारे निशान गायब हो गए; दोनों पटरियाँ अचानक समाप्त हो गईं। चारों ओर, सौ गज से भी अधिक दूरी तक, उसने व्यर्थ ही पगडंडियों के जारी रहने का कोई संकेत ढूंढा। वहाँ कुछ भी नहीं था।
वहाँ घने पेड़ थे, सभी बड़े-बड़े पेड़, स्प्रूस, देवदार, हेमलॉक; झाड़ियाँ न के बराबर थीं। वह खड़ा रहा, चारों ओर देखता रहा, पूरी तरह से परेशान; निर्णय लेने की शक्ति खो बैठा। फिर उसने दोबारा खोजना शुरू किया, बार-बार, लेकिन हर बार नतीजा वही रहा: कुछ नहीं मिला। अब तक बर्फ की सतह पर बने पैरों के निशान अब ज़मीन से हट चुके थे!
और उसी संकट और भ्रम के क्षण में, आतंक के कोड़े ने उसके दिल पर बड़ी कुशलता से प्रहार किया। इसने उसके सबसे संवेदनशील स्थान पर घातक प्रहार किया, जिससे वह पूरी तरह से विचलित हो गया। वह मन ही मन इस बात से भयभीत था कि यह कब आएगा—और आखिरकार यह आ ही गया। बहुत ऊपर, अत्यधिक ऊंचाई और दूरी के कारण धीमी, अजीब तरह से पतली और विलाप करती हुई, उसने गाइड डेफैगो की रोने की आवाज सुनी।

उस शांत, सर्द आसमान से आती हुई आवाज़ ने उसे अकल्पनीय भय और दहशत से भर दिया। राइफल उसके पैरों के पास गिर पड़ी। वह एक पल के लिए स्थिर खड़ा रहा, मानो पूरे शरीर से सुन रहा हो, फिर लड़खड़ाकर पास के पेड़ से सहारा लेकर पीछे हट गया, उसका मन और आत्मा बुरी तरह से अस्त-व्यस्त हो गए थे। उस क्षण उसे ऐसा लगा जैसे यह उसके जीवन का सबसे दिल दहला देने वाला और विचलित कर देने वाला अनुभव था, मानो अचानक किसी तेज़ हवा के झोंके से उसका दिल पूरी तरह खाली हो गया हो।
"ओह! ओह! यह अग्निमय ऊँचाई! ओह, मेरे अग्निमय पैर! मेरे जलते हुए अग्निमय पैर...!" यह व्यथा आकाश में दूर से आती हुई, अवर्णनीय विनती भरी आवाज़ में गूंजी। एक बार पुकारने के बाद, पेड़ों के घने जंगल में सन्नाटा छा गया।
और सिम्पसन, यह जाने बिना कि वह क्या कर रहा है, अचानक खुद को बेतहाशा इधर-उधर भागते हुए, खोजते हुए, पुकारते हुए, जड़ों और पत्थरों से टकराते हुए, और पुकारने वाले के पीछे दिशाहीन उन्माद में खुद को झोंकते हुए पाया। स्मृति और भावनाओं के उस पर्दे के पीछे, जिससे अनुभव घटनाओं को ढक लेता है, वह विचलित और आधा पागल होकर डूब गया, समुद्र में जहाज की तरह झूठी रोशनी को पकड़ता हुआ, उसकी आँखों, हृदय और आत्मा में आतंक था। क्योंकि उस दूर की आवाज में जंगल के आतंक ने उसे पुकारा था—अदम्य दूरी की शक्ति—विनाश करने वाले उजाड़पन का प्रलोभन। उस क्षण उसने उस व्यक्ति के सभी दर्द को महसूस किया जो निराशाजनक और अपूरणीय रूप से खो गया था, अंतिम एकांत में एक आत्मा की लालसा और पीड़ा से पीड़ित था। डेफैगो की एक छवि, उन प्राचीन जंगलों की विशाल आकाशीयता में हमेशा शिकार की जाती, भगाई जाती और पीछा की जाती, उसके विचारों के अंधेरे खंडहर में एक लौ की तरह दौड़ पड़ी...

ऐसा लग रहा था मानो सदियों बीत गईं जब तक कि उसे अपनी अव्यवस्थित भावनाओं के अराजक माहौल में कुछ ऐसा नहीं मिल गया जिस पर वह एक पल के लिए स्थिर होकर खुद को टिका सके और सोच सके... वह चीख दोबारा नहीं सुनाई दी; उसकी कर्कश आवाज में भी कोई प्रतिक्रिया नहीं हुई; जंगल की रहस्यमयी शक्तियों ने अपने शिकार को हमेशा के लिए बुला लिया था और उसे जकड़ लिया था।

फिर भी, ऐसा लगता है कि वह घंटों तक खोजता और पुकारता रहा, क्योंकि दोपहर ढलने के बाद ही उसने अंततः व्यर्थ की खोज को छोड़कर फिफ्टी आइलैंड वाटर के किनारे स्थित अपने शिविर में लौटने का फैसला किया। तब भी वह अनिच्छा से ही चल पड़ा, वह रोने की आवाज अब भी उसके कानों में गूंज रही थी। बड़ी मुश्किल से उसे अपनी राइफल और घर लौटने का रास्ता मिला। पेड़ों पर बने अधूरे निशानों का अनुसरण करने के लिए आवश्यक एकाग्रता और पेट में खलल डाल रही तेज भूख ने उसके मन को स्थिर रखने में मदद की। अन्यथा, वह स्वीकार करता है, उसके साथ हुई यह क्षणिक गड़बड़ी एक बड़ी आपदा में तब्दील हो सकती थी। धीरे-धीरे संतुलन वापस सामान्य हो गया, और उसने लगभग अपना सामान्य संतुलन फिर से प्राप्त कर लिया। लेकिन इन सबके बावजूद, शाम के धुंधलके में उसका सफर बेहद डरावना था। उसे अनगिनत कदमों की आहट सुनाई दी; हँसती और फुसफुसाती आवाजें सुनाई दीं; और पेड़ों और पत्थरों के पीछे दुबके हुए कुछ लोग दिखाई दिए, जो उसके गुजरते ही एक साथ हमला करने के लिए आपस में इशारे कर रहे थे। हवा की सरसराहट ने उसे चौंका दिया और उसे ध्यान से सुनने पर मजबूर कर दिया। वह दबे पांव चल रहा था, जहाँ तक हो सके छिपने की कोशिश कर रहा था और जितना हो सके कम आवाज कर रहा था। जंगल की परछाइयाँ, जो अब तक सिर्फ सुरक्षा या आवरण

निस्संदेह, यही सच है। उसने अवचेतन मन के मार्गदर्शन पर भरोसा किया, जो कि सहज प्रवृत्ति है। शायद, दिशा बोध, जो जानवरों और आदिम मनुष्यों में पाया जाता है, ने भी उसकी मदद की हो, क्योंकि उस घने जंगल से होते हुए वह ठीक उसी जगह पहुँच गया जहाँ डेफैगो ने लगभग तीन दिन पहले डोंगी को यह कहते हुए छिपाया था, "शिविर खोजने के लिए झील के उस पार पश्चिम की ओर सूर्य की दिशा में डोंगी चलाओ।"
अब सूरज की रोशनी कम पड़ रही थी, जिससे उसे रास्ता पता चल सके, लेकिन उसने अपनी कंपास का पूरा इस्तेमाल किया और अपनी कमज़ोर नाव में सवार होकर अपनी यात्रा के आखिरी बारह मील का सफर तय किया। उसे इस बात से बहुत राहत मिली कि आखिरकार जंगल पीछे छूट गया है। सौभाग्य से पानी शांत था; उसने अपनी मछली पकड़ने की रस्सी झील के बीचोंबीच से निकाली, बजाय इसके कि वह किनारे- किनारे बीस मील और चक्कर लगाए। सौभाग्य से, दूसरे शिकारी भी वापस आ गए थे। उनकी आग की रोशनी ने उसे दिशा का मार्गदर्शन दिया, जिसके बिना वह शायद पूरी रात शिविर की सही जगह ढूंढता रहता। लगभग आधी रात हो चुकी थी जब उसकी डोंगी रेतीले किनारे पर अटक गई, और हैंक, पंक और उसके चाचा, उसकी चीखों से नींद में खलल पड़ने पर, तेजी से नीचे दौड़े और एक बहुत थके हुए और टूटे हुए स्कॉटिश व्यक्ति को चट्टानों के ऊपर से एक बुझती हुई आग की ओर ले जाने में मदद की।

छठी

दो दिन और दो रातों से लगातार उसे परेशान कर रही जादू-टोने और डरावनी दुनिया में उसके सीधे-सादे चाचा के अचानक प्रवेश ने मामले को पूरी तरह से नया रूप दे दिया। उस तीखी आवाज़, "अरे, मेरे बच्चे! और अब क्या चल रहा है?" और उस सूखे और मज़बूत हाथ की पकड़ ने न्याय का एक नया मापदंड स्थापित कर दिया। उसके भीतर भावनाओं का एक उथल-पुथल मच गया। उसे एहसास हुआ कि उसने खुद को बहुत बुरी तरह से "बर्बाद" कर दिया था। उसे अपने आप पर थोड़ी शर्म भी महसूस हुई। उसकी जाति की स्वाभाविक कठोरता ने उसे वापस अपने वश में कर लिया।
और शायद इसी वजह से आग के चारों ओर बैठे उस समूह को सब कुछ बताना उसके लिए इतना मुश्किल था। फिर भी उसने इतना बता दिया कि तुरंत यह निर्णय लिया गया कि राहत दल को जल्द से जल्द रवाना किया जाना चाहिए, और सिम्पसन को उसका कुशलतापूर्वक नेतृत्व करने के लिए पहले भोजन और सबसे बढ़कर नींद की आवश्यकता है। डॉक्टर कैथकार्ट ने लड़के की हालत को उसके मरीज़ से कहीं अधिक समझदारी से भांपते हुए उसे मॉर्फिन का एक बहुत हल्का इंजेक्शन दिया। छह घंटे तक वह गहरी नींद में सोता रहा।
बाद में धर्मशास्त्र के इस विद्यार्थी द्वारा सावधानीपूर्वक लिखे गए विवरण से यह प्रतीत होता है कि उसने आश्चर्यचकित समूह को जो विवरण दिया, उसमें कई महत्वपूर्ण और आवश्यक बातें छूट गई थीं। वह कहता है कि अपने चाचा के स्वस्थ, सहज चेहरे को देखते हुए, उसमें उनका उल्लेख करने का साहस ही नहीं था। इस प्रकार, खोज दल को जो कुछ भी समझ में आया, वह यह था कि डेफैगो को रात में उन्माद का एक तीव्र और अस्पष्ट दौरा पड़ा था, उसने स्वयं को

किसी के द्वारा "बुलाया हुआ" महसूस किया था, और बिना भोजन या राइफल के उसके पीछे झाड़ियों में घुस गया था, जहाँ ठंड और भूख से उसकी भयानक और दर्दनाक मौत हो जाएगी, जब तक कि उसे समय पर ढूंढकर बचाया न जाए। और "समय पर", का अर्थ था तुरंत।
अगले दिन के दौरान—वे सात बजे निकल पड़े, पंक को भोजन और आग हमेशा तैयार रखने के निर्देश देकर—सिम्पसन अपने चाचा को कहानी की असलियत के बारे में काफी कुछ बता पाया, बिना यह समझे कि यह सब उससे एक बहुत ही सूक्ष्म तरीके से पूछताछ के ज़रिए निकलवाया गया था। जब तक वे रास्ते के शुरुआती बिंदु पर पहुँचे, जहाँ वापसी यात्रा के लिए डोंगी खड़ी थी, तब तक उसने बताया कि कैसे डेफैगो ने अस्पष्ट रूप से "किसी चीज़ जिसे वह 'वेंडीगो' कहता था" का ज़िक्र किया; कैसे वह नींद में रोया; कैसे उसने शिविर के आसपास एक अजीब सी गंध की कल्पना की; और मानसिक उत्तेजना के अन्य लक्षण भी दिखाए। उसने यह भी स्वीकार किया कि "उस असाधारण गंध" का उस पर कितना अजीब असर हुआ था, "शेरों की गंध की तरह तीखी और कर्कश।" और जब वे फिफ्टी आइलैंड वाटर से बस एक घंटे की दूरी पर थे, तब उसने एक और बात कह दी—जो बाद में उसे अपनी ही घबराहट भरी हालत का मूर्खतापूर्ण इज़हार लगा—कि उसने गायब हुए गाइड को "मदद के लिए" पुकारते सुना था। उसने इस्तेमाल किए गए अटपटे शब्दों को छोड़ दिया, क्योंकि वह उन बेतुकी बातों को दोहराना नहीं चाहता था। साथ ही, बर्फ में उस आदमी के पदचिह्न धीरे-धीरे जानवर के पैरों के निशानों की हूबहू छोटी आकृति कैसे बन गए थे, इसका वर्णन करते हुए उसने यह तथ्य छिपा दिया कि वे पदचिह्न अविश्वसनीय दूरी तक फैले हुए थे। यह एक ऐसा सवाल लग रहा था, जो व्यक्तिगत गर्व और ईमानदारी के बीच बँधा हुआ था, कि उसे क्या बताना चाहिए और क्या छुपाना चाहिए। उदाहरण के लिए, उसने बर्फ

में फैली लालिमा का ज़िक्र तो किया, लेकिन यह बताने से कतरा गया कि शव और बिस्तर को तंबू से थोड़ा बाहर घसीटा गया था...
अंततः, डॉ. कैथकार्ट, जो स्वयं को एक कुशल मनोवैज्ञानिक समझते थे, ने उन्हें स्पष्ट रूप से यह समझा दिया कि एकांत, भ्रम और भय से प्रभावित होकर उनका मन किस प्रकार तनावग्रस्त होकर भ्रम की स्थिति में पहुँच गया था। उनके आचरण की प्रशंसा करते हुए, उन्होंने साथ ही यह भी बताया कि उनका मन कब, कहाँ और कैसे भटक गया था। उन्होंने अपने भतीजे को विवेकपूर्ण प्रशंसा से यह महसूस कराया कि वह वास्तव में जितना श्रेष्ठ था, उससे कहीं अधिक श्रेष्ठ था, लेकिन साक्ष्य के महत्व को कम करके उन्होंने उसे उसकी वास्तविकता से कहीं अधिक मूर्ख बना दिया। दूसरे भौतिकवादियों की तरह, उन्होंने भी अपर्याप्त ज्ञान के आधार पर चतुराई से झूठ बोला, क्योंकि उनके द्वारा दिया गया ज्ञान उनकी बुद्धि को अस्वीकार्य प्रतीत हुआ।
“इन भयानक एकांतों का जादू किसी भी मन को अछूता नहीं छोड़ सकता, विशेषकर उस मन को जिसमें उच्च कल्पनाशीलता हो। इसने तुम्हारे मन पर ठीक वैसे ही प्रभाव डाला है जैसे मेरे मन पर तुम्हारी उम्र में डाला था। तुम्हारे छोटे से शिविर में मंडराने वाला जानवर निस्संदेह एक मूस था, क्योंकि मूस की आवाज कभी-कभी बहुत ही विचित्र होती है। बड़े-बड़े पदचिह्नों का रंगीन दिखना स्पष्ट रूप से उत्तेजना के कारण तुम्हारी आँखों की दृष्टि में आई खराबी थी। पदचिह्नों का आकार और फैलाव हम वहाँ पहुँचने पर पता लगा लेंगे। लेकिन किसी आवाज का सुनाई देना, मानसिक उत्तेजना के कारण होने वाले भ्रमों में से एक है - एक उत्तेजना, मेरे प्यारे बच्चे, पूरी तरह से क्षम्य है, और मैं यह भी कहना चाहूँगा कि तुमने इन परिस्थितियों में इसे अद्भुत रूप से

नियंत्रित किया है। बाकी के लिए, मुझे कहना ही होगा, तुमने अद्भुत साहस दिखाया है, क्योंकि इस जंगल में खो जाने का डर बहुत भयानक होता है, और अगर मैं तुम्हारी जगह होता, तो मैं ऐसा नहीं करता। एक पल के लिए भी मुझे लगा कि काश मैं तुम्हारी बुद्धिमत्ता और निर्णय क्षमता का एक चौथाई हिस्सा भी अपना पाता। मुझे बस एक ही बात समझाना बेहद मुश्किल लग रहा है— वो— वो बदबू।
"मुझे तो सच में बहुत बुरा लगा," उसके भतीजे ने कहा, "मुझे चक्कर आने लगे!" अपने चाचा के शांत सर्वज्ञ रवैये ने, सिर्फ इसलिए कि उन्हें मनोविज्ञान के अधिक सूत्र पता थे, उन्हें थोड़ा विद्रोही बना दिया। किसी ऐसे अनुभव की व्याख्या करना कितना आसान होता है जिसे आपने स्वयं न देखा हो। "एक तरह की वीरान और भयानक गंध, मैं बस इसी तरह इसका वर्णन कर सकता हूँ," उसने अपने बगल में बैठे शांत, भावहीन व्यक्ति के चेहरे की ओर देखते हुए कहा।
जवाब मिला, "मुझे तो आश्चर्य ही होता है कि इन परिस्थितियों में आपको यह और भी बुरा क्यों नहीं लगा।" सिम्पसन जानता था कि ये रूखे शब्द सच्चाई और उसके चाचा द्वारा "सच्चाई" की व्याख्या के बीच झूल रहे थे।

अंततः वे उस छोटे से शिविर में पहुँचे और पाया कि तंबू अभी भी खड़ा है, आग के अवशेष मौजूद हैं, और उसके बगल में एक खूंटी पर लगा कागज़ का टुकड़ा भी - बिल्कुल अछूता। हालाँकि, अनुभवहीन हाथों द्वारा बनाया गया वह गुप्त भंडार, कस्तूरी चूहों, मिंक और गिलहरियों द्वारा खोज लिया गया था और खोल दिया गया था। माचिसें

खुले स्थान पर बिखरी पड़ी थीं, लेकिन भोजन का एक-एक टुकड़ा खा लिया गया था।
“अरे यार, वो यहाँ नहीं है,” हैंक ने अपने अंदाज़ में ज़ोर से कहा। “और ये तो उतना ही पक्का है जितना नीचे कोयले का भंडार! लेकिन वो अब तक कहाँ पहुँच गया होगा, ये उतना ही अनिश्चित है जितना दूसरी जगह सिक्कों का व्यापार।” एक धर्मशास्त्र के छात्र की मौजूदगी भी उसकी भाषा पर कोई असर नहीं डाल रही थी, हालाँकि पाठक की सुविधा के लिए इसे थोड़ा संपादित किया जा सकता है। “मेरा सुझाव है,” उसने आगे कहा, “कि हम अभी निकलें और उसे जी-जान से ढूँढ़ें!”
डेफैगो के संभावित भाग्य के अंधकार ने पूरे दल को उस क्षण एक भयानक गंभीरता से घेर लिया जब उन्होंने हाल ही में हुए कब्जे के परिचित निशान देखे। विशेष रूप से तंबू, जिसमें बलसम की शाखाओं का बिस्तर अभी भी उसके शरीर के दबाव से चिकना और चपटा हो गया था, मानो उसकी उपस्थिति को उनके करीब ला रहा हो। सिम्पसन, जिसे अस्पष्ट रूप से ऐसा महसूस हो रहा था जैसे उसका जीवन किसी तरह दांव पर लगा हो, दबी हुई आवाज़ में विवरण बताने लगा। वह अब काफी शांत था, हालांकि अपनी कई यात्राओं के तनाव से थका हुआ था। उसके चाचा का समझाने का तरीका—या कहें कि "बात को टालने का तरीका"— जो विवरण अभी भी उसकी भयावह स्मृति में ताजा थे, उसने भी उसकी भावनाओं को शांत करने में मदद की।
“और वो उसी दिशा में भागा,” उसने अपने दोनों साथियों से कहा, उस दिशा की ओर इशारा करते हुए जहाँ गाइड उस सुबह धुंधली भोर में गायब हो गया था। “सीधे नीचे वो हिरण की तरह भागा, बर्च और हेमलॉक के पेड़ों के बीच से…”
हैंक और डॉ. कैथकार्ट ने एक-दूसरे की ओर देखा।

"और वहाँ से लगभग दो मील नीचे, सीधी रेखा में," दूसरे ने अपनी आवाज में पहले जैसी दहशत के साथ बोलते हुए कहा, "मैंने उसके पदचिह्नों का पीछा किया और उस जगह तक पहुँचा जहाँ—वह रुक गया— बिल्कुल!"
"और जहाँ तुमने उसकी पुकार सुनी और दुर्गंध महसूस की, और बाकी सभी घिनौने मनोरंजन को भी," हैंक ने अपनी तीव्र पीड़ा को दर्शाते हुए वाक्पटुता से कहा।
"और जहां आपका उत्साह आप पर इस हद तक हावी हो गया कि भ्रम पैदा हो गया," डॉ. कैथकार्ट ने धीमी आवाज़ में कहा, लेकिन इतनी धीमी भी नहीं कि उनके भतीजे ने इसे न सुना हो।

दोपहर का समय था, क्योंकि उन्होंने जल्दी-जल्दी यात्रा की थी, और अभी भी दिन का उजाला दो घंटे बाकी था। डॉ. कैथकार्ट और हैंक ने तुरंत खोज शुरू कर दी, लेकिन सिम्पसन इतना थका हुआ था कि वह उनके साथ नहीं जा सका। वे पेड़ों पर बने निशानों और जहाँ संभव हो, उसके पदचिह्नों का अनुसरण करेंगे। इस बीच, उसके लिए सबसे अच्छा यही था कि वह आग जलाए रखे और आराम करे।
लेकिन लगभग तीन घंटे की खोज के बाद, जब अंधेरा छा चुका था, दोनों आदमी खाली हाथ शिविर लौट आए। ताज़ी बर्फ ने सभी निशानों को ढक दिया था, और हालांकि वे चिह्नित पेड़ों का पीछा करते हुए उस जगह तक गए थे जहाँ से सिम्पसन वापस मुड़ा था, उन्हें किसी इंसान या जानवर का कोई भी संकेत नहीं मिला। किसी भी तरह के ताज़े पदचिह्न नहीं थे; बर्फ अपनी जगह पर स्थिर पड़ी थी।
यह तय करना मुश्किल था कि सबसे अच्छा क्या किया जाए, हालाँकि वास्तविकता में उनके पास और कोई चारा नहीं था। वे हफ़्तों तक रुककर खोज करते रह सकते थे, लेकिन सफलता की संभावना बहुत कम थी।

दुर्भाग्यशाली मार्गदर्शक के मन पर अपना प्रभाव डाला था। हैंक, यद्यपि उस किंवदंती की सामान्य रूपरेखा से परिचित था, फिर भी बातचीत के इस मोड़ से स्पष्ट रूप से खुश नहीं था। उसने बहुत कम योगदान दिया, हालाँकि उसका थोड़ा सा योगदान भी ज्ञानवर्धक था। उसने स्वीकार किया कि इस पूरे क्षेत्र में यह कहानी प्रचलित थी कि पिछले वर्ष के पतझड़ में फिफ्टी आइलैंड वाटर के तट पर कई भारतीयों ने "वेंडीगो को देखा" था, और यही डेफैगो के वहाँ शिकार न करने का असली कारण था। हैंक को निस्संदेह यह महसूस हो रहा था कि उसने अपने पुराने दोस्त को ज़रूरत से ज़्यादा समझाकर एक तरह से उसकी मौत में मदद की थी। "जब कोई भारतीय पागल हो जाता है," उसने समझाया, ऐसा लग रहा था जैसे वह दूसरों से ज़्यादा खुद से बात कर रहा हो, "तो हमेशा यही कहा जाता है कि उसने 'वेंडीगो को देखा है।' और बेचारा डेफेगो तो हद से ज़्यादा अंधविश्वासी था...!"
फिर सिम्पसन ने माहौल को अधिक सहानुभूतिपूर्ण पाते हुए, अपनी इस चौंकाने वाली कहानी को दोबारा सुनाया; इस बार उन्होंने कोई भी विवरण नहीं छोड़ा; उन्होंने अपनी अनुभूतियों और भय का भी जिक्र किया। उन्होंने केवल इस्तेमाल की गई अजीब भाषा का उल्लेख नहीं किया।
"लेकिन डेफैगो ने तुम्हें वेंडिगो की कहानी के ये सारे विवरण पहले ही बता दिए होंगे, मेरे प्यारे दोस्त," डॉक्टर ने जोर देकर कहा। "मेरा मतलब है, उसने इसके बारे में बात की होगी, और इस तरह तुम्हारे मन में वे विचार डाले होंगे जिनसे बाद में तुम्हारा उत्साह विकसित हुआ?"
इस पर सिम्पसन ने फिर से तथ्यों को दोहराया। उसने कहा कि डेफैगो ने उस जानवर का ज़िक्र न के बराबर किया था। सिम्पसन को उस कहानी

के बारे में कुछ भी पता नहीं था, और जहाँ तक उसे याद था, उसने उसके बारे में कभी पढ़ा भी नहीं था। यहाँ तक कि वह शब्द भी उसके लिए अपरिचित था।
बेशक वह सच कह रहा था, और डॉ. कैथकार्ट अनिच्छा से ही सही, इस पूरे मामले की विलक्षण प्रकृति को स्वीकार करने के लिए विवश हो गए। हालाँकि, उन्होंने यह शब्दों से ज़्यादा अपने हाव-भाव से किया। वे एक मज़बूत, तगड़े पेड़ से पीठ टिकाए खड़े रहे; आग के बुझने के संकेत मिलते ही उन्होंने उसे फिर से तेज़ कर दिया; वे रात में होने वाली किसी भी हल्की सी आवाज़ को भी तुरंत पहचान लेते थे—झील में मछली का उछलना, झाड़ी में टहनी का टूटना, या ऊपर की शाखाओं से गर्मी से पिघलकर गिरती बर्फ़ के टुकड़ों का। उनकी आवाज़ में भी थोड़ा बदलाव आया, वह थोड़ी कम आत्मविश्वासी और धीमी हो गई। सीधे शब्दों में कहें तो, डर उस छोटे से शिविर के चारों ओर मंडरा रहा था, और यद्यपि तीनों अन्य विषयों पर बात करना चाहते थे, फिर भी वे केवल इसी विषय पर चर्चा कर पा रहे थे— उनके डर का स्रोत। उन्होंने अन्य विषयों पर बात करने की कोशिश की, लेकिन व्यर्थ; उनके बारे में कहने के लिए कुछ था ही नहीं। हैंक समूह में सबसे ईमानदार था; उसने लगभग कुछ नहीं कहा। लेकिन उसने कभी भी अंधेरे की ओर पीठ नहीं मोड़ी। उसका चेहरा हमेशा जंगल की ओर रहता था, और जब लकड़ी की आवश्यकता होती थी तो वह उसे लाने के लिए आवश्यक दूरी से अधिक दूर नहीं जाता था।

सातवीं

चारों ओर सन्नाटे की दीवार सी छा गई थी, क्योंकि बर्फ मोटी तो नहीं थी, लेकिन किसी भी आवाज़ को दबाने के लिए काफी थी, और पाला भी बर्फ को मजबूती से जमाए हुए था। उनकी आवाज़ों और आग की हल्की गड़गड़ाहट के अलावा कोई आवाज़ सुनाई नहीं दे रही थी। बस कभी- कभार चीड़ के पतंगे के पंखों की फड़फड़ाहट जैसी हल्की सी आवाज़ हवा में से गुज़रती थी। किसी को भी सोने की जल्दी नहीं थी। समय धीरे-धीरे आधी रात की ओर बढ़ रहा था।
"यह किंवदंती काफी आकर्षक है," डॉक्टर ने एक लंबे विराम के बाद कहा, उनका बोलना विराम तोड़ने के लिए था न कि इसलिए कि उन्हें कुछ कहना था, "क्योंकि वेंडिगो वास्तव में जंगल की पुकार का मानवीकरण है, जिसे कुछ जीव अपने विनाश की ओर ले जाते हैं।"
"बस इतना ही," हैंक ने थोड़ी देर बाद कहा। "और इसे सुनने पर कोई गलतफहमी नहीं होती। यह आपको नाम से पुकारता है।"
कुछ देर का विराम रहा। फिर डॉ. कैथकार्ट ने वर्जित विषय पर इतनी तेज़ी से बात शुरू की कि बाकी लोग चौंक गए।
“यह उपमा बहुत महत्वपूर्ण है,” उसने अँधेरे में चारों ओर देखते हुए कहा, “क्योंकि कहते हैं कि वह आवाज़ जंगल की सभी छोटी-छोटी आवाज़ों से मिलती-जुलती है—हवा, गिरता पानी, जानवरों की आवाज़ें, इत्यादि। और, एक बार पीड़ित उसे सुन लेता है—तो वह हमेशा के लिए गायब हो जाता है! इसके अलावा, कहा जाता है कि उसके सबसे कमज़ोर अंग पैर और आँखें होती हैं; पैर, आप जानते हैं, भटकने की लालसा के लिए और आँखें सुंदरता की लालसा के लिए। बेचारा भिखारी इतनी भयानक गति से भागता है कि उसकी आँखों के नीचे से खून बहने लगता है और उसके पैर जलने लगते हैं।”

बोलते समय डॉ. कैथकार्ट लगातार आसपास के अंधकार में बेचैनी से देखते रहे। उनकी आवाज धीमी और दबी हुई हो गई।
उन्होंने आगे कहा, "ऐसा कहा जाता है कि वेंडिगो अपने पैरों को तब तक जलाता है - घर्षण के कारण, जो जाहिर तौर पर उसकी जबरदस्त गति के कारण होता है - जब तक कि वे गिर न जाएं, और बिल्कुल वैसे ही नए पैर बन जाएं।"
सिम्पसन ने भयभीत होकर सुना; लेकिन हैंक के चेहरे की पीली रंगत ने उसे सबसे अधिक आकर्षित किया। अगर हिम्मत होती तो वह अपने कान बंद कर लेता और आंखें बंद कर लेता।
"यह हमेशा ज़मीन पर भी नहीं रहता," हैंक की धीमी, भारी आवाज़ में सुनाई दिया, "यह इतना ऊपर उड़ जाता है कि इसे लगता है जैसे तारों ने इसे आग लगा दी हो। और कभी-कभी यह ज़ोरदार छलांगें लगाता है, पेड़ों की चोटियों पर दौड़ता है, अपने साथी को साथ लेकर, और फिर उसे ऐसे गिरा देता है जैसे कोई बाज़ मछली को खाने से पहले मारकर गिराता है। और इसका भोजन, पूरे जंगल की सारी गंदगी में से—काई है!" और वह एक छोटी, बनावटी हंसी हंसा। "वेंडीगो काई खाने वाला है," उसने अपने साथियों के चेहरों की ओर उत्साह से देखते हुए कहा। "काई खाने वाला," उसने अपनी कल्पना से निकले सबसे अजीबोगरीब अपशब्दों की एक श्रृंखला के साथ दोहराया।
लेकिन सिम्पसन अब इस सारी बातचीत का असली मकसद समझ गया था। ये दोनों आदमी, जो अपने-अपने तरीके से ताकतवर और "अनुभवी" थे, सबसे ज़्यादा जिस चीज़ से डरते थे, वो थी खामोशी। वे समय के खिलाफ़ बात कर रहे थे। वे अंधेरे के खिलाफ़, घबराहट के आक्रमण के खिलाफ़, इस बात को स्वीकार करने के खिलाफ़ कि वे दुश्मन के देश में हैं—दरअसल, हर चीज़ के खिलाफ़, ताकि उनके अंदरूनी विचार उन पर हावी न हो सकें। वह खुद, जो पहले से ही भयानक दहशत से घिरे हुए

रही थी—जैसे मानो उसकी सारी इंद्रियाँ क्षीण हो गई हों। फिर क्षण भर के लिए उसकी आँखों में क्रोध की ज्वाला भड़क उठी, और वह भी, हालांकि अपने स्वभाविक आत्म-नियंत्रण से प्रेरित होकर, अपनी जगह से उठा और उत्तेजित गाइड का सामना किया। क्योंकि यह अस्वीकार्य, मूर्खतापूर्ण और खतरनाक था, और वह इसे शुरू में ही रोकना चाहता था।
अगले एक-दो मिनट में क्या हुआ होगा, इस बारे में अटकलें तो लगाई जा सकती हैं, लेकिन निश्चित रूप से कभी पता नहीं चल सकता, क्योंकि हैंक की गरजती आवाज के बाद छाए गहरे सन्नाटे में, मानो उसके जवाब में, ऊपर आकाश के अंधेरे में कुछ भयानक गति से गुजरा— कुछ ऐसा जो निश्चित रूप से बहुत बड़ा था, क्योंकि उसने बहुत हवा को विस्थापित किया, जबकि पेड़ों के बीच से एक धुंधली और हवा में गूंजती मानवीय आवाज सुनाई दी, जो अवर्णनीय पीड़ा और विनती के स्वर में पुकार रही थी।
"ओह, ओह! यह अग्निमय ऊँचाई! ओह, ओह! मेरे अग्निमय पैर! मेरे जलते हुए अग्निमय पैर!"
शर्ट के किनारे तक सफेद पड़ चुके हैंक ने बच्चे की तरह बेवकूफी भरी निगाहों से इधर-उधर देखा। डॉ. कैथकार्ट ने कुछ अस्पष्ट चीख मारी और डर के मारे सहज ही तंबू की ओर मुड़े, फिर वहीं जम से गए। तीनों में से केवल सिम्पसन ही थोड़ा संभला। उसका अपना डर इतना गहरा था कि वह तुरंत कोई प्रतिक्रिया नहीं दे पाया। उसने वह चीख पहले भी सुनी थी।
अपने क्षुब्ध साथियों की ओर मुड़ते हुए उन्होंने लगभग शांत स्वर में कहा—
"मैंने ठीक वही चीख सुनी—ठीक वही शब्द जो उसने कहे!"

फिर, अपना चेहरा आकाश की ओर उठाते हुए, वह ज़ोर से चिल्लाया, "डेफैगो, डेफैगो! हमारे पास नीचे आओ! नीचे आओ—!"
और किसी के लिए कोई ठोस कदम उठाने का समय मिलने से पहले ही, पेड़ों के बीच से कुछ भारी-भार गिरने की आवाज़ आई, जो नीचे गिरते हुए डालियों से टकराई और नीचे जमी हुई धरती पर ज़ोरदार धमाके के साथ जा गिरी। उस धमाके और गड़गड़ाहट की आवाज़ सचमुच भयानक थी। "ये रहा वो, हे भगवान!" हैंक की आवाज़ दबी हुई सी फुसफुसाहट में निकली, उसका हाथ अपने आप ही कमर में रखी शिकार करने वाली छुरी की ओर बढ़ गया। "और वो आ रहा है! वो आ रहा है!" उसने डर के मारे बेतहाशा हंसते हुए कहा, क्योंकि बर्फ पर भारी कदमों की आवाज़ साफ सुनाई देने लगी, जो अंधेरे में से रोशनी के घेरे की ओर बढ़ती जा रही थी।
और जैसे-जैसे लड़खड़ाते कदमों की आहट उनके करीब आती गई, तीनों आदमी उस आग के चारों ओर स्थिर और मौन खड़े रहे। डॉ. कैथकार्ट अचानक मुरझाए हुए व्यक्ति की तरह लग रहे थे; उनकी आँखें भी नहीं हिल रही थीं। हैंक, असहनीय पीड़ा से जूझते हुए, हिंसक प्रतिक्रिया देने के कगार पर लग रहा था; फिर भी उसने कुछ नहीं किया। वह भी पत्थर का बना हुआ लग रहा था। वे पीड़ित बच्चों की तरह दिख रहे थे। दृश्य भयावह था। और इसी बीच, उनके मालिक का अभी भी अदृश्य होना, कदमों की आहट जमी हुई बर्फ को कुचलते हुए करीब आती गई। यह अंतहीन था—इतना लंबा कि वास्तविक नहीं लग रहा था— यह सधी हुई और निर्दयी आहट। यह शापित थी।

आठवीं

फिर अंततः अंधकार ने बड़ी मेहनत से एक आकृति को प्रकट किया। वह अनिश्चित प्रकाश के उस क्षेत्र में, जहाँ आग और परछाइयाँ आपस में मिली हुई थीं, दस फीट से भी कम दूरी पर आगे बढ़ी; फिर रुक गई और उन्हें टकटकी लगाकर देखने लगी। उसी क्षण वह तारों से खींची जाने वाली किसी वस्तु की तरह ऐंठन भरी गति से फिर से आगे बढ़ी और उनके करीब आकर, आग की चकाचौंध में, उन्होंने देखा कि वह एक आदमी था; और स्पष्ट रूप से वह आदमी डेफैगो था।
उस क्षण मानो भय की एक चादर हर चेहरे पर उतर आई, और तीन जोड़ी आंखें उस चादर के आर-पार ऐसे चमक उठीं मानो वे सामान्य दृष्टि की सीमाओं को पार करके अज्ञात में झांक रही हों।
डेफैगो लड़खड़ाते और अनिश्चित कदमों से आगे बढ़ा; वह पहले समूह के साथ सीधे उनके पास पहुँचा, फिर अचानक मुड़ा और सिम्पसन के चेहरे को करीब से देखा। उसके होठों से एक आवाज निकली—
"मैं यहाँ हूँ, बॉस सिम्पसन। मैंने किसी को मुझे पुकारते सुना।" आवाज़ बहुत धीमी और सूखी थी, मानो बहुत ज़्यादा मेहनत करने से साँस फूल रही हो। "मैं तो बिल्कुल नरक की आग में जल रहा हूँ।" और वह हँसते हुए अपना सिर आगे की ओर झुकाकर दूसरे के चेहरे के पास ले आया।
लेकिन उस हंसी ने मोम की सफेद चमड़ी वाली मोम की मूर्तियों के समूह में हलचल मचा दी। हैंक तुरंत आगे बढ़ा और इतनी अटपटी गालियां बकने लगा कि सिम्पसन को समझ ही नहीं आया कि वो अंग्रेजी बोल रही हैं, बल्कि उसे लगा कि हैंक किसी भारतीय या किसी और भाषा में बात कर रहा है। उसे बस इतना एहसास हुआ कि हैंक की मौजूदगी, जो इस तरह उनके बीच आ गया था, वाकई स्वागत योग्य थी—असाधारण रूप

से स्वागत योग्य। डॉ. कैथकार्ट, हालांकि अधिक शांत और आराम से, लड़खड़ाते हुए उसके पीछे-पीछे चलने लगे।
अगले कुछ सेकंडों में वास्तव में क्या कहा और किया गया, इस बारे में सिम्पसन को कुछ स्पष्ट याद नहीं है, क्योंकि उस घृणित और विकृत चेहरे की आँखें इतनी नज़दीक से उसकी आँखों में झाँक रही थीं कि उसकी इंद्रियाँ पहले तो पूरी तरह से स्तब्ध रह गईं। वह बस स्थिर खड़ा रहा। उसने कुछ नहीं कहा। उसमें उन बड़े लोगों जैसी दृढ़ इच्छाशक्ति नहीं थी जो उन्हें हर तरह के भावनात्मक तनाव के बावजूद कार्रवाई करने के लिए मजबूर कर देती थी। उसने उन्हें ऐसे हिलते-डुलते देखा जैसे किसी शीशे के पीछे से उनकी वास्तविकता को आधा नष्ट कर दिया गया हो; यह स्वप्न जैसा था; विकृत। फिर भी, हैंक के अर्थहीन वाक्यों की बाढ़ के बीच, उसे अपने चाचा का अधिकारपूर्ण स्वर याद है—कठोर और बनावटी—जो भोजन और गर्माहट, कंबल, व्हिस्की और बाकी चीजों के बारे में कई बातें कह रहे थे... और, इसके अलावा, उस तीखी, अपरिचित गंध की हल्की-हल्की गंध, घिनौनी लेकिन मीठी-सी स्तब्ध कर देने वाली, उसके नथुनों पर लगातार हमला करती रही।
हालांकि, यह कोई और नहीं बल्कि वही व्यक्ति था—जो दूसरों की तुलना में कम अनुभवी और कुशल था—जिसने सहजता से उस वाक्य को बोल दिया जिसने प्रत्येक व्यक्ति के दिल में उठ रहे संदेह और विचारों को व्यक्त करके उस भयावह स्थिति में कुछ हद तक राहत प्रदान की।
"यह तुम ही हो, है ना, डेफैगो?" उसने दबी आवाज़ में पूछा, भय से उसकी वाणी टूट गई।
और इससे पहले कि दूसरा कुछ बोल पाता, कैथकार्ट ने ज़ोर से जवाब दिया, "बिल्कुल! बिल्कुल! बस—क्या तुम देख नहीं सकते—वह

थकावट, ठंड और डर से लगभग मरणासन्न है! क्या यह किसी इंसान को पूरी तरह से बदल देने के लिए काफी नहीं है?" यह उसने खुद को और दूसरों को समझाने के लिए कहा था। उसके शब्दों पर इतना ज़ोर देना ही इस बात का प्रमाण था। और बोलते और काम करते समय, वह लगातार अपनी नाक पर रुमाल रखे रहता था। उस रुमाल की गंध पूरे शिविर में फैल गई।
बड़ी आग के पास दुबके, कंबलों में लिपटे, गर्म व्हिस्की पीते और कमजोर हाथों में खाना पकड़े बैठे "डेफैगो" का रूप उस गाइड से बिल्कुल अलग था जिसे उन्होंने आखिरी बार जीवित देखा था, ठीक वैसे ही जैसे साठ साल के आदमी की तस्वीर उसकी जवानी की किसी पुरानी तस्वीर से अलग नहीं होती, जिसने किसी और पीढ़ी के कपड़े पहने हों। उस भयानक विकृत चेहरे, उस नकल को, जो आग की रोशनी में डेफैगो का रूप धारण किए बैठा था, शब्दों में बयान करना वाकई मुश्किल है। अपनी उन भयानक और डरावनी यादों के अवशेषों से, जो अब भी उसके मन में बसी हैं, सिम्पसन कहता है कि उसका चेहरा इंसान से ज़्यादा जानवर जैसा था, चेहरे की बनावट बेमेल थी, त्वचा ढीली और लटकी हुई थी, मानो उस पर असाधारण दबाव और तनाव डाला गया हो। इससे उसे लुडगेट हिल पर फेरीवालों द्वारा फुलाए गए उन मूत्राशय जैसे चेहरों की धुंधली सी याद आ गई, जो फूलते ही अपना भाव बदल लेते हैं और सिकुड़ते ही एक धीमी और विलाप जैसी आवाज़ निकालते हैं। चेहरा और आवाज़ दोनों में कुछ ऐसी ही घिनौनी समानता झलकती थी। लेकिन कैथकार्ट ने बहुत समय बाद, अवर्णनीय का वर्णन करने की कोशिश करते हुए दावा किया कि ऐसा चेहरा और शरीर दिख सकता था जो इतनी विरल हवा में रहा हो कि वायुमंडल का भार हट जाने पर, पूरी संरचना बिखर कर बेमेल हो जाने का खतरा पैदा हो गया हो...

हालांकि हैंक बेहद परेशान और भावनाओं के उफान से कांप रहा था, जिसे वह न तो संभाल पा रहा था और न ही समझ पा रहा था, फिर भी उसने बिना किसी हिचकिचाहट के स्थिति को चरम पर पहुंचा दिया। वह आग से थोड़ी दूरी पर चला गया, जाहिर तौर पर इसलिए ताकि रोशनी उसकी आंखों को ज्यादा चकाचौंध न कर दे, और एक पल के लिए दोनों हाथों से अपनी आंखों को ढकते हुए, उसने गुस्से और स्नेह से भरी एक भयानक मिश्रित आवाज में चिल्लाया:
"तुम डेफेगो नहीं हो! तुम बिलकुल भी डेफेगो नहीं हो! मुझे कोई फ़र्क नहीं पड़ता, लेकिन ये तुम नहीं हो, मेरे बीस साल पुराने दोस्त!" उसने दुबके हुए उस व्यक्ति को ऐसे घूरा मानो उसे अपनी आँखों से ही नष्ट कर देगा। "और अगर तुम वही हो, तो मैं नरक की ज़मीन को टूथपिक पर रुई के टुकड़े से साफ़ कर दूँगा, भगवान मेरी मदद करे!" उसने घृणा और भय से भरे स्वर में कहा।
उसे चुप कराना नामुमकिन था। वह पागलों की तरह चिल्लाता हुआ खड़ा था, उसे देखना और सुनना दोनों ही भयानक था—क्योंकि यही सच था। उसने पचास अलग-अलग तरीकों से अपनी बात दोहराई, हर तरीका पिछले से ज़्यादा अजीब था। जंगल उसकी आवाज़ों से गूंज उठा। एक पल ऐसा लगा मानो वह "घुसपैठिए" पर झपटने वाला हो, क्योंकि उसका हाथ बार-बार अपनी कमर में बंधी लंबी शिकार करने वाली छुरी की ओर बढ़ रहा था।
लेकिन अंत में उसने कुछ नहीं किया, और सारा हंगामा आँसुओं के साथ ही समाप्त हो गया। हैंक की आवाज़ अचानक लड़खड़ा गई, वह ज़मीन पर गिर पड़ा, और कैथकार्ट ने किसी तरह उसे तंबू के अंदर जाकर चुपचाप लेटने के लिए मना लिया। दरअसल, बाकी की सारी घटनाएँ उसने तंबू के पीछे से देखीं, उसका पीला और डरा हुआ चेहरा तंबू के दरवाज़े के छेद से झाँक रहा था।

फिर डॉ. कैथकार्ट, उनके भतीजे के साथ, जिन्होंने अब तक उन सभी से बेहतर साहस बनाए रखा था, दृढ़ निश्चय के साथ आगे बढ़े और आग के पास दुबके हुए डेफैगो के सामने खड़े हो गए। उन्होंने सीधे उसकी आँखों में देखा और बोलना शुरू किया। पहले तो उनकी आवाज़ दृढ़ थी।
"डेफैगो, हमें बताओ क्या हुआ है—बस थोड़ा सा, ताकि हम जान सकें कि तुम्हारी मदद कैसे की जाए?" उसने अधिकारपूर्ण, लगभग आदेशात्मक स्वर में पूछा। और उस समय, यह आदेश ही था। हालाँकि, तुरंत बाद, इसका भाव बदल गया, क्योंकि सामने वाले व्यक्ति का चेहरा इतना दयनीय, इतना भयानक और मानवता से इतना रहित था कि डॉक्टर उससे ऐसे पीछे हट गया जैसे किसी आध्यात्मिक रूप से अपवित्र चीज़ से। उसके ठीक पीछे देख रहे सिम्पसन कहते हैं कि उन्हें ऐसा लगा जैसे कोई मुखौटा उतरने ही वाला हो, और उसके नीचे उन्हें कुछ काला और शैतानी, पूरी तरह नग्न अवस्था में दिखाई देगा। "बताओ, यार, बताओ!" कैथकार्ट चिल्लाया, भय और विनती एक साथ चल रहे थे। "हममें से कोई भी इसे और बर्दाश्त नहीं कर सकता...!" यह तर्क पर हावी सहज प्रवृत्ति की पुकार थी।
और फिर "डेफैगो," सफेद मुस्कान के साथ, उस पतली और क्षीण होती आवाज में उत्तर दिया जो पहले से ही एक बिल्कुल अलग तरह की आवाज में बदलती हुई प्रतीत हो रही थी—
"मैंने उस विशाल वेंडिगो को देखा था," उसने फुसफुसाते हुए कहा, और अपने आसपास की हवा को ठीक एक जानवर की तरह सूंघा। "मैं उसके साथ भी था—"
यह कहना मुश्किल है कि बेचारा और कुछ कहता या डॉ. कैथकार्ट असंभव पूछताछ जारी रखते, क्योंकि उसी क्षण हैंक की चीख कैनवास

के पीछे से सुनाई दी, जिसने उसकी भयभीत आँखों के अलावा सब कुछ छिपा रखा था। ऐसी चीख पहले कभी नहीं सुनी गई थी।
"उसके पैर! हे भगवान, उसके पैर! उसके बदले हुए पैरों को देखो!" डेफैगो अपनी जगह पर ही हिलते-डुलते हुए इस तरह से चला गया कि पहली बार उसके पैर पूरी तरह से रोशनी में आ गए और उसके पंजे दिखाई देने लगे। फिर भी सिम्पसन के पास खुद यह देखने का समय नहीं था कि हैंक ने क्या देखा था। और हैंक ने कभी भी इस बारे में बताना उचित नहीं समझा। उसी क्षण, एक डरे हुए बाघ की तरह छलांग लगाते हुए, कैथकार्ट उस पर टूट पड़ा और कंबल की तहों को इतनी तेज़ी से अपने पैरों के चारों ओर लपेट लिया कि उस युवा छात्र को मोकासिन पहने पैरों की जगह पर कुछ काला और अजीब सा जमा हुआ दिखाई दिया, और वह भी धुंधली दृष्टि से।
फिर, इससे पहले कि डॉक्टर कुछ और कर पाते, या सिम्पसन को कोई सवाल सोचने का भी समय मिलता, पूछना तो दूर की बात है, डेफैगो उनके सामने सीधा खड़ा था, दर्द और कठिनाई से संतुलन बनाए हुए, और उसके बेढंगे और मुड़े हुए चेहरे पर एक ऐसा गहरा और द्वेषपूर्ण भाव था कि वह सही मायने में राक्षसी था।
"अब तुमने भी देख लिया," वह हांफते हुए बोला, "तुमने मेरे जलते हुए पैर देख लिए! और अब—यानी, अगर तुम मुझे बचा नहीं सकते और रोक नहीं सकते—तो अब समय आ गया है—"
उसकी दयनीय और विनती भरी आवाज़ एक ऐसी ध्वनि से बाधित हुई जो झील के पार से आती हवा के प्रचंड शोर जैसी थी। ऊपर के पेड़ अपनी उलझी हुई शाखाओं को हिला रहे थे। धधकती आग की लपटें किसी विस्फोट के सामने झुकने जैसी लग रही थीं। और कुछ भयानक, तेज़ शोर के साथ छोटे से शिविर में आया और ऐसा लगा जैसे एक ही पल में उसे पूरी तरह से घेर लिया हो। डेफैगो ने अपने शरीर से चिपके हुए

कंबल झटक दिए, पीछे जंगल की ओर मुड़ा, और उसी लड़खड़ाते हुए गति से, जिससे वह आया था—गायब हो गया: गायब, इससे पहले कि कोई उसे रोकने के लिए अपनी मांसपेशियों को हिला पाता, एक अविश्वसनीय, बेतहाशा तेज़ी से गायब हो गया जिसने उसे कुछ करने का समय नहीं दिया। अंधेरा उसे पूरी तरह से निगल गया; और एक दर्जन सेकंड से भी कम समय बाद, हिलते पेड़ों के शोर और अचानक हवा के तेज झोंके के ऊपर, तीनों आदमी, भयभीत हृदय से देखते और सुनते हुए, एक चीख सुनी जो आकाश की ऊँचाई और दूरी से उन पर गिरती हुई प्रतीत हुई—
"ओह, ओह! यह अग्निमय ऊँचाई! ओह, ओह! मेरे अग्निमय पैर! मेरे जलते हुए अग्निमय पैर...!" फिर यह आवाज़ अनंत अंतरिक्ष और सन्नाटे में विलीन हो गई।
डॉ. कैथकार्ट—जो अचानक खुद पर और इसलिए दूसरों पर भी नियंत्रण पा चुके थे—ने किसी तरह हैंक को उस समय हिंसक रूप से बांह से पकड़ लिया जब वह झाड़ियों में बेतहाशा भागने की कोशिश कर रहा था।
"लेकिन मैं जानना चाहता हूँ," गाइड चीखी। "मैं देखना चाहता हूँ! वह बिल्कुल भी वह नहीं है, बल्कि कोई शैतान है जिसे उसकी जगह पर धकेल दिया गया है...!"
किसी न किसी तरह—वह स्वीकार करते हैं कि उन्हें खुद ठीक से पता नहीं था कि उन्होंने यह कैसे किया—उन्होंने उसे तम्बू में रोके रखा और शांत किया। डॉक्टर, जाहिर तौर पर, उस स्थिति में पहुँच चुके थे जहाँ प्रतिक्रिया शुरू हो गई थी और उन्होंने अपनी सहज शक्ति को हावी होने दिया। निश्चित रूप से उन्होंने हैंक को बड़ी कुशलता से संभाला। हालाँकि, अब तक इतने संयमित रहने वाले उनके भतीजे ने ही उन्हें सबसे अधिक चिंता में डाल दिया, क्योंकि संचित तनाव ने अब उसे अत्यधिक रोने की बीमारी

(लैक्रिमोस हिस्टीरिया) में बदल दिया था, जिसके कारण उसे टहनियों और कंबलों के बिस्तर पर हैंक से यथासंभव दूर रखना आवश्यक हो गया था।
और वह वहीं लेटा रहा, उस भयानक रात के पहरों की गूँज उस सुनसान शिविर पर गुज़रती रही, वह अपनी चादर में सिसकते हुए अटपटे वाक्य और वाक्यों के टुकड़े बुदबुदा रहा था। गति, ऊँचाई और आग के बारे में बड़बड़ाहट का ढेर कक्षा की बाइबिल संबंधी यादों के साथ अजीब तरह से घुलमिल गया था। "टूटे चेहरों वाले, आग से जलते लोग, शिविर की ओर बहुत ही भयानक गति से आ रहे हैं!" वह एक पल कराहता; और अगले ही पल उठकर जंगल की ओर घूरता, ध्यान से सुनता, और फुसफुसाता, "जंगल में कितने भयानक हैं—उनके पैर—" जब तक कि उसके चाचा आकर उसके विचारों की दिशा नहीं बदल देते और उसे दिलासा नहीं देते।
सौभाग्यवश, यह उन्माद अस्थायी ही साबित हुआ। नींद ने उसे ठीक कर दिया, ठीक वैसे ही जैसे हैंक को ठीक किया था।
सुबह पांच बजे के कुछ ही देर बाद जब सूरज की पहली किरणें दिखाई दीं, तब तक डॉ. कैथकार्ट जागते रहे। उनका चेहरा पीला पड़ गया था और आंखों के नीचे अजीब सी लालिमा छाई हुई थी। उन खामोश घंटों के दौरान, आत्मा का एक भयानक भय उनकी इच्छाशक्ति से जूझ रहा था। ये कुछ बाहरी लक्षण थे...
भोर होते ही उसने खुद आग जलाई, नाश्ता बनाया और बाकी लोगों को जगाया, और सात बजे तक वे अपने घर के शिविर की ओर वापस जाने के लिए अच्छी तरह से निकल पड़े थे - तीन परेशान और दुखी आदमी, लेकिन प्रत्येक ने अपने-अपने तरीके से अपनी आंतरिक उथल-पुथल को कमोबेश व्यवस्थित स्थिति में फिर से ला दिया था।

नौवीं

वे कम बोलते थे, और जब बोलते भी थे तो केवल सबसे सामान्य और सार्थक बातों पर ही चर्चा करते थे, क्योंकि उनके मन में पीड़ादायक विचार भरे हुए थे जो स्पष्टीकरण की मांग कर रहे थे, हालांकि कोई भी उनका जिक्र करने की हिम्मत नहीं करता था। आदिम परिस्थितियों के सबसे करीब होने के कारण हैंक ने सबसे पहले खुद को पहचाना, क्योंकि वह कम जटिल था। डॉ. कैथकार्ट में "सभ्यता" ने एक असाधारण हमले के खिलाफ उनकी सेनाओं का समर्थन किया। शायद आज भी, वह कुछ बातों को लेकर पूरी तरह आश्वस्त नहीं हैं। खैर, उन्हें खुद को पहचानने में अधिक समय लगा।
धर्मशास्त्र के विद्यार्थी सिम्पसन ने ही अपने निष्कर्षों को संभवतः सर्वोत्तम, यद्यपि सबसे वैज्ञानिक नहीं, क्रम में व्यवस्थित किया था। उस निर्जन, अछूते जंगल के बीचोंबीच, उन्होंने निश्चित रूप से कुछ बेहद आदिम और मौलिक रूप से देखा था। कुछ ऐसा जो मानवता के विकास से किसी तरह बच निकला था, भयानक रूप से उभरा था, जो जीवन के एक ऐसे पैमाने को दर्शाता था जो अभी भी विकराल और अपरिपक्व था। उन्होंने इसे प्रागैतिहासिक युग की एक झलक के रूप में देखा, जब विशाल और असभ्य अंधविश्वास अभी भी मनुष्यों के दिलों पर हावी थे; जब प्रकृति की शक्तियाँ अभी भी अनियंत्रित थीं, वे शक्तियाँ जो शायद एक आदिम ब्रह्मांड में व्याप्त थीं, अभी तक समाप्त नहीं हुई थीं। आज भी वे उस चीज़ के बारे में सोचते हैं जिसे उन्होंने वर्षों बाद एक प्रवचन में "मनुष्यों की आत्माओं के पीछे छिपी क्रूर और दुर्जेय शक्तियाँ" कहा था, जो शायद स्वयं में बुरी नहीं थीं, फिर भी सहज रूप से मानवता के प्रति शत्रुतापूर्ण थीं।

अपने चाचा के साथ उन्होंने इस विषय पर कभी विस्तार से चर्चा नहीं की, क्योंकि दोनों प्रकार की मानसिकता के बीच की दूरी के कारण यह चर्चा कठिन थी। वर्षों बाद, एक बार, किसी बात ने उन्हें इस विषय की सीमा तक पहुँचा दिया—बल्कि विषय के एक छोटे से विवरण तक।
"क्या तुम मुझे यह भी नहीं बता सकते कि वे कैसे थे?" उसने पूछा; और जवाब, हालांकि बुद्धिमत्ता से दिया गया था, उत्साहजनक नहीं था, "बेहतर होगा कि तुम जानने या पता लगाने की कोशिश न करो।" "अच्छा—वो गंध...?" भतीजे ने लगातार पूछा। "तुम इसके बारे में क्या सोचते हो?"
डॉ. कैथकार्ट ने उनकी ओर देखा और अपनी भौहें ऊपर उठाईं। उन्होंने उत्तर दिया, "गंधें, ध्वनि और दृश्यों की तरह टेलीपैथिक संचार के लिए इतनी आसान नहीं होतीं। मैं शायद उतना ही या उससे कम ही करता हूँ जितना आप स्वयं करते हैं।"
वह अपनी व्याख्याओं में हमेशा की तरह इतने सहज नहीं थे। बस इतना ही।

दिन ढलने पर, ठंड से कांपते, थके-हारे और भूख से व्याकुल होकर, दल लंबी पैदल यात्रा के अंत तक पहुँचा और खुद को घसीटते हुए एक शिविर में पहुँचा जो पहली नज़र में खाली लग रहा था। वहाँ आग नहीं थी, और कोई पंक उनका स्वागत करने के लिए आगे नहीं आया। तीनों की भावनात्मक क्षमता इतनी कमज़ोर हो चुकी थी कि वे न तो आश्चर्य और न ही झुंझलाहट दिखा सके; लेकिन हैंक के होठों से निकली सहज स्नेह की चीख, जब वह उनसे आगे चूल्हे की ओर भागा, शायद एक चेतावनी थी कि इस अद्भुत घटनाक्रम का अंत अभी नहीं हुआ था। और कैथकार्ट और उसके भतीजे दोनों ने बाद में स्वीकार किया कि जब

उन्होंने उसे उत्साह में घुटने टेकते और बुझी हुई राख के पास धीरे-धीरे हिलती हुई किसी चीज़ को गले लगाते देखा, तो उन्हें अपने भीतर तक महसूस हुआ कि यह "कुछ" डेफैगो साबित होगा - सच्चा डेफैगो, जो लौट आया था।
और वास्तव में ऐसा ही हुआ।
कहानी जल्द ही खत्म हो जाती है। बुरी तरह से थका-हारा, वह फ्रांसीसी कनाडाई—जो कुछ भी उसका बचा था—राख में हाथ-पैर मार रहा था, आग जलाने की कोशिश कर रहा था। उसका शरीर वहीं दुबका हुआ था, उसकी कमजोर उंगलियां टहनियों और माचिस के साथ जीवन भर की सहज आदत का बेबस होकर पालन कर रही थीं। लेकिन अब उसके पास इस सरल क्रिया को निर्देशित करने के लिए कोई दिमाग नहीं था। दिमाग कहीं खो चुका था। और उसके साथ ही, स्मृति भी गायब हो गई थी। न केवल हाल की घटनाएं, बल्कि उसका पूरा पिछला जीवन एक खालीपन था। इस बार वह सचमुच का इंसान था, हालांकि अविश्वसनीय रूप से और भयानक रूप से सिकुड़ा हुआ। उसके चेहरे पर किसी भी प्रकार का भाव नहीं था—डर, स्वागत या पहचान। ऐसा प्रतीत होता था कि वह नहीं जानता था कि उसे किसने गले लगाया, या किसने उसे भोजन कराया, गर्माहट दी और सांत्वना और राहत के शब्द कहे। मानवीय सहायता से परे, अकेला और टूटा हुआ, वह छोटा आदमी विनम्रतापूर्वक आदेश का पालन करता रहा। वह "कुछ" जो उसे "व्यक्ति" बनाता था, हमेशा के लिए गायब हो गया था।
कुछ मायनों में यह अब तक देखी गई किसी भी चीज़ से कहीं अधिक भयावह था—सूजे हुए गालों से खुरदरी काई के गुच्छे निकालते हुए उसकी वह मूर्खतापूर्ण मुस्कान और यह कहना कि वह "एक अभिशापित काई खाने वाला" है; साधारण भोजन को भी लगातार उल्टी कर देना; और सबसे बुरा, वह दयनीय और बचकानी शिकायत भरी आवाज़ जिसमें उसने

बताया कि उसके पैरों में दर्द हो रहा है—"आग की तरह जल रहे हैं"—जो स्वाभाविक ही था जब डॉ. कैथकार्ट ने उनकी जाँच की और पाया कि दोनों पैर बुरी तरह जमे हुए थे। आँखों के नीचे हाल ही में हुए रक्तस्राव के हल्के निशान थे।
इतने लंबे समय तक खुले में रहने के बाद वह कैसे जीवित रहा, वह कहाँ-कहाँ गया था, या उसने एक शिविर से दूसरे शिविर तक की इतनी लंबी दूरी कैसे तय की, जिसमें झील का एक लंबा चक्कर पैदल ही लगाना भी शामिल था क्योंकि उसके पास कोई डोंगी नहीं थी—ये सब बातें अज्ञात हैं। उसकी याददाश्त पूरी तरह से गायब हो गई थी। और जिस सर्दी की शुरुआत में यह विचित्र घटना घटी थी, उसके खत्म होने से पहले ही, डेफैगो, जो मन, स्मृति और आत्मा से विरक्त था, इस दुनिया से चला गया। वह केवल कुछ सप्ताह ही जीवित रहा।
और पंक ने कहानी में जो कुछ जोड़ा, उससे इस पर कोई और प्रकाश नहीं पड़ता। वह शाम को लगभग पाँच बजे झील के किनारे मछलियाँ साफ़ कर रहा था—यानी खोज दल के लौटने से एक घंटा पहले—तभी उसने गाइड की एक परछाई को धीरे-धीरे शिविर की ओर आते देखा। उसने बताया कि उसके आगे एक अजीब सी गंध की हल्की सी आहट सुनाई दी। उसी क्षण बूढ़ा पंक घर के लिए निकल पड़ा। उसने तीन दिन का पूरा सफर ऐसे तय किया जैसे सिर्फ भारतीय खून ही कर सकता था। एक पूरी जाति का आतंक उसे प्रेरित कर रहा था। वह जानता था कि इसका क्या मतलब है। डेफैगो ने "वेंडीगो को देखा था।"